ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

चैत्र २०७९ अप्रैल २०२२

अपनी संस्कृति, अपना देश
अपने भाषा, भूषा, वेश।
नव संवत् पर नई उमंगें
नए स्वप्न, संकल्प विशेष।।

₹ २०

नूतन संवत्सर की मंगलकामनाएँ।

भारतीय नववर्ष

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

ईस्वी सन नववर्ष भुलाएँ।
भारतीय नववर्ष मनाएँ।।
अँग्रेजी का नया वर्ष तो
प्रथम जनवरी से है चलता।
भीषण ठंड शीतलहरी में
अर्धरात्रि में उत्सव खलता।
अँग्रेजी की पराधीनता
आओ हम मन से ठुकराएँ।।
मार्च–अप्रैल नवरात्र से
नव संवत का शुभारंभ है।।
यह भारतीय कालगणना है
वैज्ञानिक है, नहीं दंभ है।।
वासंती मौसम होता है
साथ प्रकृति के हम मुस्काएँ।।
रक्षाबंधन, विजयादशमी
संवत् के अनुसार मनाते।
गृह प्रवेश, मंगल विवाह भी
शुभ मुहूर्त में ही हैं भाते।
राशि, लग्न, दिन, ग्रह, नक्षत्र से
हम जीवन की चाल मिलाएँ।।
जन्माष्टमी, रामनवमी हो
एकादशी, पूर्णमासी।
व्रत–त्यौहारों की संस्कृति से
जुड़े हुए भारतवासी।
ईस्वी सन से बहुत पुरानी
निज गौरव गाथा दोहराएँ।।
सूर्य–चंद्रमा की गति से है
संवत्सर गणना संबद्ध
बारहमास व्यवस्था रहती
ग्रह–नक्षत्रों से आबद्ध।
भारतीयता के रंग में ही
अपने सुंदर स्वप्न सजाएँ।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

चैत्र	२०७९	वर्ष	४२
अप्रैल	२०२२	अंक	१०

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

चैत्र मास में किस-किस का जन्मदिन आता है? यह प्रश्न पूछने पर संभवत: आप उत्तर दें, राम नवमी को भगवान रामजी का, कोई कहेगा पूर्णिमा को हनुमान जी का। कई यह भी बता देंगे कि वर्षप्रतिपदा को सृष्टि का आरंभ दिवस होने से यह धरती माता का भी जन्मदिन है। अनेक बच्चे बता सकते हैं, यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का भी जन्मदिन है जो अंग्रेजी तारीख से भी एक अप्रैल को आता है और १४ अप्रैल संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव आम्बेडकर जी का भी जन्मदिन है। महाप्रभु आचार्य वल्लभराय जी और महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले का जन्मदिन भी इस अप्रैल माह में है ऐसा भी कुछ भैया/बहिनों को पता होगा? लेकिन मैं इस बार आपसे एक ऐसे जन्मदिन की बात कर रहा हूँ जो किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि एक ग्रन्थ का जन्मदिन है। एक ऐसा ग्रन्थ जिसकी रचना लगभग ४४८ वर्ष पूर्व सन १५७४ में हुई। भारतीय काल गणना के अनुसार यह चैत्र शुक्ल नवमी वि. सं. १६३१ को मंगलवार का दिन था और जन्म हुआ था अयोध्या में बाबा तुलसीदास जी गोस्वामी की कुटिया में, उन्हीं की कलम से। ग्रन्थ का नामकरण हुआ **श्रीरामचरितमानस!** सात काण्डों में विभक्त ४६०८ चौपाई, १०७४ दोहों, २०७ सोरठों, २७ श्लोकों व ८६ छन्दों रचित इस महाकाव्य की रचना २ वर्ष ७ माह २६ दिन में श्रीराम विवाहोत्सव दिवस अर्थात् मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी सं. १६३३ अर्थात् सन १५७६ में पूर्ण हुई।

बच्चो! यह एक ऐसा महान ग्रन्थ है जो लगभग ४५० वर्षों बाद भी भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का बोध कराने वाला ग्रंथ सिद्ध हुआ है। अनपढ़, गरीब, ग्रामीण कहे जाने वाले साधारण से साधारण लोग हों या अत्यन्त विद्वान लोग श्रीरामचरितमानस न केवल उनका प्रिय है बल्कि जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर सबको इसकी चौपाइयाँ, दोहे आज भी सीख देते हैं, उनकी समस्याएँ सुलझाते हैं।

इसका बालकाण्ड तो आप बच्चों को अवश्य ही पढ़ना चाहिए। इसमें जीवन में मार्गदर्शन देने वाली आप बच्चों के लिए विशेष काम की अनेक बातें लिखी हैं।

रामचरितमानस गाने में भी बहुत आनंद आता है। यहाँ तक कि आपकी अवस्था के एक बच्चे ग्यारह वर्षीय अवि शर्मा ने तो बालमुखी रामायण ही लिख डाली। जानते हैं, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उन्हें इस पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान किया है।

मानस की महिमा महान। बचपन से जीवन में स्थान।
ग्रहण करो जो देकर ध्यान। हो अवश्य जीवन उत्थान।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- पुस्तकें मुस्कुरा उठीं -अलका अग्रवाल ०५
- हार और जीत से आगे -सीमा जैन भारत ०७
- मेरे देश की धरती -उषा सोमानी १४
- सच्ची भक्ति -सुधा दुबे २३
- अक्ल बड़ी या भैंस -पवन कुमार वर्मा २७
- सोनपरी -मुरलीधर वैष्णव ४२

छोटी कहानी

- चिरौंजीलाल की जलेबियाँ -सुरेश सौरभ ३३
- मिल गया चोर -पवित्रा अग्रवाल ४६

आलेख

- पर्व सन्देश -कृष्णचंद्र टवाणी १२

प्रेरक प्रसंग

- रामायण 'पाठ' से उद्धार? ११

बाल प्रस्तुति

- चींटियों की सीख -अलीशा सक्सेना ४५

कविता

- भारतीय नववर्ष -गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ०२
- समय -नलिन खोईवाल ०६
- अभिनंदन है -मनीषा बनर्जी ४४
- वाह वाह रे गर्म समोसे -डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल ४५
- कोयल रानी कहाँ गई? -अजीव अंजुम ५०
- नववर्ष तुम्हारा अभिनंदन -दुर्गाप्रसाद शुक्ल 'आजाद' ५१

स्तंभ

- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी १०
- शिशु गीत -सफदर हाशमी ११
- पुस्तक परिचय - १६
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २०
- सरल विज्ञान -संकेत गोस्वामी २५
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान - २६
- आपकी पाती - ३०
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी ३१
- छः अंगुल मुस्कान - ३४
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' ३६
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ४०

बौद्धिक क्रीडा

- भूल भुलैया -चाँद मो. घोसी १८
- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स २२

चित्रकथा

- भैया की बुद्धिमानी -देवांशु वत्स १९
- सुरक्षित -संकेत गोस्वामी ३५
- शेरू का भोजन -देवांशु वत्स ३९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए- "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

पुस्तकें मुस्कुरा उठी

– अलका अग्रवाल

छुट्टी की घंटी बजते ही, बच्चे अपने–अपने बस्ते लेकर खुशी में झूमते हुए बाहर निकलने लगे। सब घर जाने की जल्दी में एक–दूसरे से आगे निकलना चाहते थे। सब कमरों पर ताले लगाकर चौकीदार भी अपनी कोठरी में चला गया था। सांझ होने लगी थी। चिड़ियों की चहचहाने की आवाजें गूँज रही थीं। सूरज पहाड़ियों के पीछे विश्राम के लिए जा चुका था।

विद्यालय के वाचनालय में एक अलमारी में छोटे बच्चों के लिए किताबें रहती थीं। पुस्तकालय के सन्नाटे में उस अलमारी से आती हुई आवाजें गूँजने लगी। सबसे ऊपर के खाने में बच्चों की कहानियों की किताबें बातें कर रही थीं। सुंदर–सुंदर चित्रों से सजी कहानियों की एक किताब दूसरी किताब से कह रही थी– ''देखो बहन! बच्चे मेरा जरा भी ध्यान नहीं रखते। एक लापरवाह और शैतान बच्चे ने तो मेरा बहुत सुंदर मुखपृष्ठ ही फाड़ दिया। देख रही हो ना तुम, क्या हालत बना दी है मेरी।''

दूसरी किताब सुबकते हुए बोली– ''तुम तो बहुत अच्छी हालत में हो दीदी! मुझे देखो, मेरे तो पन्ने ही गायब हैं। कुछ बच्चों ने सुंदर चित्रों के लालच में मेरे पन्ने ही काट दिए हैं।''

ऐसा कहते हुए बेबस लाचार किताब के आँसू आ गए। पहली किताब ने दूसरी किताब के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा– ''यह तो हम सबकी लगभग एक–सी हालत है। सबकी एक ही व्यथा है। इसलिए आपस में बात करके सब अपना–अपना दिल हलका कर सकते हैं।''

बीच के खाने की कविताओं की किताबें भी कहाँ चुप रहने वाली थीं। मजेदार कविता वाली किताब बोली– ''मेरी कविताओं को सुनकर बच्चे हँस–हँसकर लोट–पोट हो जाते हैं। लेकिन मुझे भी इन बच्चों ने अपना शिकार बनाया है। देखो, जगह–जगह पर निशान बने हुए हैं। मेरे सुंदर से पन्नों को जगह–जगह बदसूरत बना देखकर बहुत ही शर्म आती है।''

अब कार्टून वाली पुस्तक से भी चुप न रहा गया। आँखों में आँसू रोकते हुए बोली– ''मुझ पर दृष्टि डालो तो पता चलेगा कि मेरे शरीर पर ब्लेड से वार किया गया है। अब मेरा शरीर कार्टून बुक के स्थान पर कंकाल जैसा रह गया है।''

उसकी यह दशा देखकर सचमुच सबकी आँखें भर आईं। तभी एक पुस्तक कुछ याद करते हुए कहने लगी– ''हमारा सुंदर होना, हमारा मजेदार होना ही हमारे लिए अभिशाप बन जाता है। जिन बच्चों के लिए हमें बनाया गया है, वही हमारे शत्रु बने हुए हैं। भला, ऐसे–कैसे जीवित रह पाएँगे, हम सब लोग।''

अब तक काफी रात हो गई थी। नन्हें तारे अँधेरे से लड़ने का असफल प्रयास कर रहे थे। अब भी पुस्तकें आपस में दु:ख बाँट रही थीं। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि जिन बच्चों के लिए उन्हें बनाया गया है, वही बच्चे उनके साथ ऐसा क्यों करते हैं?

एक नन्हीं–सी किताब भोलेपन से बोली– ''क्या बच्चों के माँ–पिता और शिक्षक उन्हें कुछ नहीं सिखाते कि वे किताबों से प्यार करें। उन्हें संभाल कर रखें। उन्हें इतना भी नहीं मालूम कि ड्राईंग कॉपी में चित्र बनाए जाते हैं, किताबों पर नहीं। आप लोग

देखिए, मेरे हर पेज पर ही पेंसिल से ही रंगों से भी चित्र बनाए गए हैं। इन चित्रों के कारण मुझ पर लिखी कहानी पढ़ी भी नहीं जा सकती। जब कोई बच्चा मुझे कहानी पढ़ने के लिए ले जाता है तो उसे बड़ी निराशा होती है।''

बहुत देर से किताबों का दुखड़ा सुन रही, एक साफ-सुथरी, सुंदर और लगभग नई-सी लग रही किताब भी अपने पर संयम नहीं रख सकी। उसने उन सबके विपरीत अपनी बात सबके सामने प्रस्तुत करते हुए कहा- ''वैसे तो मैं आप सबसे बहुत छोटी हूँ। लेकिन आपकी बातें सुनने पर, मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझ रही हूँ। आप देख रहे हैं ना कि मैं आज भी बहुत अच्छी स्थिति में हूँ। हालाँकि बच्चे घर ले जाकर मुझे पढ़ चुके हैं। पर ना तो इस पर पेंसिल के निशान हैं न ही कोई और दाग। किसी भी बच्चे ने मुझे खाना खाते समय नहीं पढ़ा है। यहाँ तक कि मेरा आगे-पीछे या बीच में से कोई पृष्ठ भी नहीं फाड़ा है। किसी ने ब्लेड या कैंची से मेरे किसी चित्र को काटने का प्रयत्न भी नहीं किया है। मुझे अपनी स्थिति पर गर्व है।''

जब उस किताब ने अपनी बात समाप्त की, तब सभी किताबों के चेहरों पर उसके प्रति ईर्ष्या का भाव था। और साथ ही वे यह भी सोच रही थीं। ''काश! हमें भी ऐसे ही समझदार बच्चे पढ़ते तो हमारी भी यह दुर्दशा नहीं होती।''

रात बढ़ती जा रही थी। लगभग सब की परेशानियाँ सामने आ चुकी थी। समस्या का कोई समाधान नजर नहीं आ रहा था। तभी एक समझदार पुस्तक ने सबको संबोधित करते हुए संतुष्ट करने के स्वर में कहा- ''हम सब अपनी-अपनी बात कहकर, अपना मन हल्का कर चुके हैं। रात बहुत हो गई है और अब हम सबको सो जाना चाहिए। काश! हमारी आवाज बच्चों तक पहुँच पाती, जो नहीं जानते कि पुस्तकों के साथ बुरा व्यवहार करके वे अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं।''

अब सभी पुस्तकें अपना दु:ख बाँटने के बाद भारी मन से सोने चली गईं। उन्हें सपना आने लगा जिसमें बच्चों ने उनकी पीड़ा को समझकर पुस्तकों को हँसाने का निश्चय किया था। वे नींद में ही मुस्कुरा उठीं।

- जयपुर (राजस्थान)

कविता

समय

- नलिन खोईवाल

टिक टिक टिक ये घड़ी चली है
लगती सुंदर और भली है
नहीं है समय पास हमारे
सबके मन में यह खलबली है।

कभी दीवार पर टंग जाती
कभी कलाई पर बंध जाती
फूल कभी तितली सरीखी
कई रूप में ढल जाती।

समय को जिसने भी पहचाना
समय ने उसको पल में जाना
कभी न उसका जीवन ठहरा
आगे बढ़ना उसने ठाना।

सबसे बड़ा बलवान समय है
करो समय की जय है जय है
जिसका साथी बना समय है
उसको किससे कोई न भय है।

- इन्दौर (म. प्र.)

हार और जीत से आगे

– सीमा जैन भारत

कहानी तो वही पुरानी है, जिसमें अपनी धुन का पक्का कछुआ, दौड़ जीत जाता है और खरगोश का अति–आत्मविश्वास उसकी हार का कारण बनता है। आओ, बच्चो! हम जानते हैं उस दिन इस कहानी ने कैसे नया रूप ले लिया–

मल्ला घाटी में धीरज कछुए और गर्वित खरगोश के बीच दौड़ थी। आज गर्वित को उसके माता–पिता समझा रहे थे कि– ''देखो बेटा! इस बार तुमको दौड़ जीतना ही है। कोई गलती नहीं कर देना।'' ''नहीं, पिताजी कोई गलती नहीं होगी। मैं दौड़ जीतकर पुरानी भूल को सुधार दूँगा। धीरज अपनी धीमी चाल से क्या कर सकता है?''

''बस, यही गलती हमारे पूर्वज ने की थी, जिसका दर्द हम आज तक सह रहे हैं।'' गर्वित की माँ ने उसे टोकते हुए कहा। ''धीरज को कमजोर मत समझना! वह लगन का पक्का है और यही उसकी जीत का राज भी है।'' गर्वित के पिताजी ने उसके कान को सहलाते हुए कहा। गर्वित अपनी दौड़ के लिए तैयार हो गया। उसकी दादी उसके पास आई, उसे आशीर्वाद देने के लिए।

उन्होंने उसे गले लगाते हुए कहा– ''मेरे बच्चे! हमारी जीत की कामना तुमसे ही जुड़ी है। ध्यान से दौड़ना।''

''हाँ, दादी! आप चिंता क्यों करती हो? क्या आपको मुझ पर विश्वास नहीं है?''

''अरे, नहीं मेरे बच्चे मुझे तुम पर पूरा विश्वास है बस तुम सचेत रहना।'' दादी की बात पूरी भी नहीं हुई कि गर्वित आगे बढ़ गया।

उसकी माँ ने उसे रोकते हुए कहा– ''गर्वित! दादी के पैर छूकर आशीर्वाद लो!'' गर्वित ने पीछे मुड़कर दादी के पैर हुए। उसकी दादी उसे जाते हुए देख रही थी और मन ही मन सोच रही थी कि आज तो हमारी जीत होनी ही चाहिए। उधर चिंता से धीरज की माँ का बुरा हाल था। धीरज तो मुँह लटकाकर बैठा था। एकदम चुप। ''माँ! कल हम दौड़ जीत गए थे पर अब तो सब कुछ बदल गया है। हम कैसे जीत सकते हैं?'' ''क्यों नहीं जीत सकते? लगन पक्की हो तो...'' उसकी माँ कुछ कहती उसके पहले ही उसके पिता ने उसे हिम्मत देते हुए कहा।

''अरे! हर बार कोई नहीं जीत सकता है। हमको मेहनत के साथ-साथ हार के लिए भी अपने बच्चे को तैयार करना चाहिए।'' धीरज के दादाजी ने कमरे के बाहर से ही कहा।

''पिताजी! आप यह क्या कह रहे हैं? हमारा धीरज कभी हार सकता है क्या?'' उसके पिताजी ने अधीरता से कहा।

''अरे! यह कहकर तो तुम इस पर एक मानसिक दबाव बना रहे हो। क्या आवश्यक है कि यह भी अपने पूर्वजों की तरह एक अच्छा धावक ही बने? उसे संगीत पसंद है तो उसे उसमें ही आगे बढ़ना चाहिए था।'' उसके दादाजी ने वह बात कही जो धीरज के पिता समझना नहीं चाहते थे।

अब धीरज के पिता कुछ भी नहीं कह पाए। उन्हें लग रहा था कि शायद उन्होंने धीरज को खेल की जगह संगीत सीखने देना चाहिए था। आज उसकी उदासी और डर का कारण यही है। उसकी पसंद से उसे दूर कर दिया गया है। उन्हें याद आया वह दिन जब धीरज ने चहकते हुए पूछा था- ''पिताजी! आज मैंने संगीत की कक्षा में अपना लिखवाया और आज ही मुझे हमारी कक्षा की ओर से अगले महीने होने वाली प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिल गया है।'' उस दिन धीरज बहुत प्रसन्न था।

उसकी प्रसन्नता को अनदेखा करके उन्हेंने गुस्से में धीरज से कहा था- ''बेटा! तुम तो बड़ी मन मानी करने लगे हो। हमारा संगीत से क्या काम है? तुमको तो एक अच्छा धावक बनाना है। कल ही जाकर तुम अपना नाम खेल में लिखवा लेना।'' यह सुनकर धीरज उदास हो गया था।

वह केवल इतना ही कह पाया था- ''पिताजी! मेरी इच्छा....''

''बहस नहीं!'' कहकर उन्होंने उसे चुप कर दिया था। आज वही सब याद करते हुए धीरज के पिता ने अपने पिताजी से कहा- ''हाँ बाबूजी! आज धीरज का उदास चेहरा देखकर मुझे अपनी गलती समझ में आ रही है। मगर अब....''

''तुमको अपनी भूल समझ में आई यही बहुत बड़ी बात है। धीरज इस खुशी में बहुत तेज भाग लेगा कि अब वह संगीत सीखने वाला है।'' दादाजी ने धीरज की ओर देखते हुए कहा। धीरज की आँखें मारे प्रसन्नता के चमक उठीं थी।

धीरज को प्यार से छूते हुए उसके पिता ने कहा- ''बेटा! आज की दौड़ में तुम भाग ले लो। किन्तु कल से तुम गुरुजी के पास संगीत सीखने अवश्य जाओगे।'' यह सुनकर धीरज प्रसन्नता से झूम उठा। उसने अपने दादाजी और माता-पिता के पैर छुए। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया।

दौड़ के मैदान में पहुँचने पर धीरज और गर्वित ने एक-दूसरे को देखा। हाथी चाचा को अपनी सूँड़ उठाकर दौड़ की शुरूआत करनी थी। जंगल के सभी जीव बड़े उत्साह से इस दौड़ को देखने आए थे। इस दौड़ को जीतने के लिए उन्हें पहाड़ का एक चक्कर पूरा करना था। गर्वित ने धीरज से कहा- ''तुम चलना शुरू करो। मैं तो तुमको पकड़ ही लूँगा।''

गर्वित की बात सुनकर धीरज कुछ नहीं बोला और आगे बढ़ गया। वह अपनी चाल से चल रहा था कि उसके पैर में कुछ चुभा, उसने देखा तो उसका पैर एक काँच के नुकीले टुकड़े पर पड़ गया था। उसमें से खून निकल गया। धीरज ने खून और दर्द की परवाह नहीं की और आगे बढ़ गया। उसके पैर में अब दर्द अधिक हो रहा था फिर भी वह नहीं रुका और चलता ही गया।

उधर गर्वित ने थोड़ा सुस्ताने के बाद चलना शुरू किया। वह थोड़ी दूर चला और उसे रास्ते पर खून के निशान दिखाई दिए। उन्हें देखकर वह घबरा गया। जिस धीरज को वह हराना चाहता था उसे उसकी चिंता होने लगी। अब तो वह तेजी से भागा और उसने देखा कि धीरज चल रहा है और उसके पैर से खून बह रहा है। उसने दुखी होकर कहा– ''धीरज! तुम्हारे पैर से रक्त निकल रहा है। तुम कैसे चल रहे हो? रुक जाओ, मत चलो।''

''अरे! मैं रुक कैसे सकता हूँ मेरे दोस्त? किसी ने रास्ते पर काँच के टुकड़े फेंक दिए थे उसके कारण...''

''अरे! ऐसे बहते खून और घाव के साथ तुम कैसे चल सकते हो?'' आज गर्वित का मन अपने साथी के लिए पिघल गया।

''मुझे चलना ही होगा। आज की दौड़ के बाद मुझे संगीत की कक्षा में जाने की अनुमति मिल जाएगी।''

''ठहरो! तुम ऐसे नहीं चल सकते हो।'' गर्वित ने कहा। ''फिर क्या करूँ?'' दुखी होकर धीरज ने पूछा। ''तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें लेकर चलता हूँ।''

''ऐसे कैसे हो सकता है?'' ''क्यों नहीं हो सकता है? आओ, तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।'' ''अरे! तुम्हारे बाल तो बड़े चिकने हैं। मैं फिसल रहा हूँ।'' ''तुम मेरे कान पकड़ लो फिर ठीक रहेगा।''

धीरज ने गर्वित के कान पकड़ लिए और गर्वित उसे अपनी पीठ पर बैठाकर अब धीरे–धीरे अपने गंतव्य की ओर चल पड़ा दौड़ समाप्त होने के निशान तक पहुँचते–पहुँचते गर्वित का कान बहुत तेजी से दर्द हो रहा था और वह थक भी चुका था। किन्तु क्या करता, उसे अपने दोस्त को समापन रेखा पर लेकर आना था। एक साथ उन दोनों को समापन रेखा पर देखकर सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। किन्तु किसी को यह समझ नहीं आया कि गर्वित की पीठ पर धीरज क्यों बैठा है?

जब गर्वित ने सबको बताया तो सबकी प्रसन्नता दो गुनी हो गई। केवल धीरज के पैर में ही घाव नहीं हो गया था, गर्वित के कानों के नीचे से भी खून बहने लगा था। बंदर दादा ने उस दोनों के घाव पर मिट्टी का मरहम लगाया। दो मित्रों के प्रेम में हार–जीत को भूलकर पूरा जंगल खुशी से झूम उठा। हाँ, आज कछुआ और खरगोश बहुत प्रसन्न थे और आपस में गले मिल रहे थे। बरसों पुरानी होड़ आज अपनेपन में बदल चुकी थी।

– ग्वालियर (म. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

प्रेरक प्रसंग (जयंती : वर्ष प्रतिपदा)

रामायण 'पाठ' से उद्धार?

डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता है। वर्षप्रतिपदा को उनका जन्मोत्सव आता है। एक बार एक धार्मिक प्रवृत्ति के गृहस्थ उनके घर में अतिथि के रूप में आए। प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर वे अध्यात्म रामायण का पाठ करने बैठे। पाठ समाप्त होने पर उन्होंने पुस्तक पर पुष्प चढ़ाकर भक्तिभाव पूर्वक उसे प्रणाम किया। डॉक्टर साहब ने उनसे पूछा कि रामायण में बताए हुए मार्ग के अनुसार आप अपने जीवन में व्यवहार करने का प्रयत्न तो अवश्य ही करते होंगे। अतिथि महोदय डॉक्टर साहब के इस कथन पर अत्यन्त कुपित होकर बोले– ''अध्यात्म रामायण मात्र पाठ करने की चीज है। उससे ही मनुष्य का उद्धार होता है।''

''चारित्र्य सम्पन्न न बनते हुए अथवा सद्गुणों का विकास न करते हुए पूजा मात्र से मनुष्य का उद्धार हो जाता है, यह बात अपने हिन्दू धर्मग्रंथों में अथवा अपनी परम्परा में कहीं पर भी नहीं कही गयी है।

वास्तविक रूप में तो कोई विशिष्ट पूजा, मनुष्य को विशिष्ट तत्व का स्मरण कराने वाली, उस तत्व को जीवन में चरितार्थ करने वाला प्रेरक स्फूर्ति स्त्रोत बनना चाहिए।'' डॉ. साहब ने स्पष्ट मत प्रकट कर दिया।

शिशु गीत

बात की बात

– सफदर हाशमी

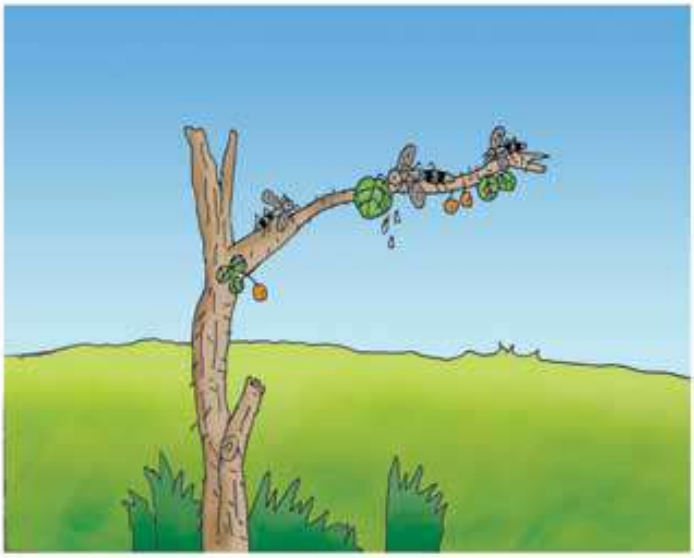

बात की बात,
खुराफात की
खुराफात।
बेरिया का पत्ता,
सवा सत्रह हाथ।

उस पे ठहरी बारात,
मच्छर ने मारी एड़।
तो टूट गया पेड़।
पत्ता गया मुड़,
बारात गई उड़।

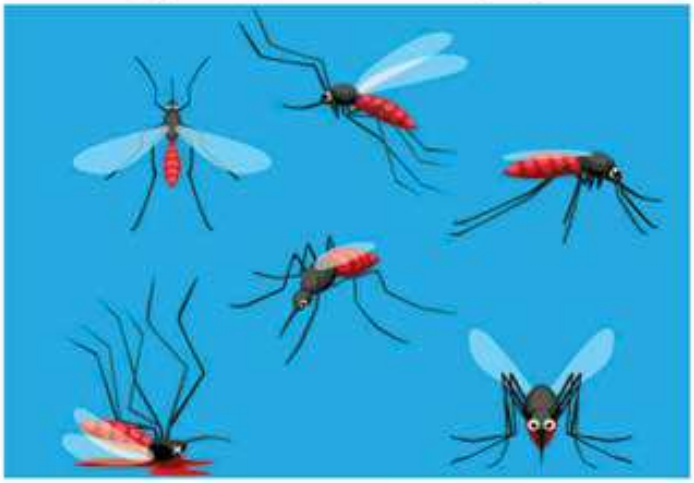

(१२ अप्रैल १९५४ को दिल्ली में जन्मे श्री सफदर हाशमी बाल साहित्य में एक महत्वपूर्ण नाम है। श्री हाशमी जी ने बाल साहित्य को अनेक रचनाओं से समृद्ध किया। ०२ जनवरी १९८९ को वे दिवंगत हुए। प्रस्तुत है उनका एक शिशु गीत– सम्पादक)

पर्व संदेश

– कृष्णचन्द्र टवाणी

नव संवत्सर

नव संवत् का प्रथम दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 'नव संवत्सर' को हर्षो उल्लास के साथ मनाया जाता है। महाराष्ट्र में इसे गुडी पाडवा और मालवा में गुड़ी पड़वां के नाम से मनाते हैं। यह दिन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। सृष्टि रचना का प्रथम दिवस, विक्रम संवत्सर का प्रारम्भिक दिवस, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक, आर्य समाज का स्थापना दिवस, चैत्र नवरात्रि की दुर्गा उपासना का प्रथम दिवस, भारतीय कालगणना का प्रथम दिवस, शालिवाहन शक सम्वत का प्रथम दिवस, डॉ. केशवराव बलिराम हेगडेवार का जन्म दिवस, भगवान झूलेलाल का जन्म दिवस आदि अनेक घटनाओं की लड़ियों एवं स्मृतियों की मणियों से जुड़ा हुआ है यह दिन।

नव संवत के दिन नीम की कोमल पत्तियों, काली मिर्च व गुड़ को मिलाकर खाना बहुत ही शुभ माना जाता है। इनके सेवन से शरीर निरोग रहता है इस नीम व गुड़ को मिश्रित कर खाने के पीछे एक अति मधुर भावना छिपी हुई है। जीवन में कभी दु:ख अकेले नहीं आते हैं। सुख के पीछे दु:ख तथा दु:ख के पीछे सुख का क्रम चलता रहता है। नीम की कड़ुवाहट तथा गुड़ की मिठास हमें यह प्रेरणा देती है कि जीवन में कितने ही कष्ट आएँ उनको हँसते–हँसते सहन करना चाहिए। हमें यह पर्व कर्त्तव्य पालन के साथ–साथ प्रभु भक्ति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है।

नवरात्र

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन 'नवरात्र' कहे जाते हैं। यह पर्व वर्ष में दो बार आता है एक चैत्र में वासन्तिक नवरात्र एवं दूसरा आश्विन में शारदीय नवरात्र। दोनों नवरात्रों का मनाना फलप्रद बतलाया गया है। 'नवरात्र' भारतीयों के लिए शक्ति–पूजन, शक्ति–संवर्धन और शक्ति–संचय का संदेश लेकर आता है। नवरात्र में शक्ति की आराधना तथा शास्त्रों द्वारा बतलाए गए व्रत का पालन करके, इसके माध्यम से त्रिविध शक्ति का संचय करके हम अपने भावी जीवन की यात्रा के पथ पर अग्रसर होते हैं।

सभी वेदों और शास्त्रों का यही मत है कि सूर्य, शिव, विष्णु, गणेश और शक्ति, अलग–अलग होने पर भी एक ब्रह्म के रूप हैं। प्रत्येक हिन्दू घर में कुलदेवी के रूप में किसी न किसी नाम से शक्ति की पूजा की जाती है। जो लोग सौर, शैव, वैष्णव और गाणपत्य हैं, वे भी मुख्य रूप से अपने इष्टदेवों को मानकर, गौण रूप में देवी की उपासना अवश्य करते हैं। 'नवरात्र' में देवी (शक्ति) के नौ रूपों का पूजन किया जाता है। इस दिन देवी माँ से प्रार्थना करें कि हे देवी माँ! हम अपराधों सहित आपकी शरण में आए हैं। हम सबका हार्दिक प्रणाम स्वीकार कीजिए। जो भी सद्भाव से आपका पूजन कर रहा हो उसकी हर एक विपत्ति को दूर कर उसका जीवन अमृतमयी बनाना।

जिस घर में आपके नाम का दीपक जल रहा हो उस घर को हर प्रकार के विघ्न से बचाना है। हे माते! जिस श्रद्धा और विश्वास से आपका जागरण (पूजन) किया जा रहा है। उसे आप स्वीकार कर हम सबकी मनोकामनाओं को पूर्ण करना। हे महारानी! आप हम सबको बल बुद्धि देना, हब सब पर अपनी दया दृष्टि बनाये रखना और हम सबका कल्याण करना।

रामनवमी

मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम का पावन जन्म दिवस चैत्र शुक्ला नवमी को सर्वत्र मनाया जाता है। भगवान राम त्रेता में अवतरित हुए, मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए, व्यापक कीर्ति अर्जित की मानव जीवन का आदर्श संसार के सम्मुख उपस्थित किया तथा हर भारतवासी के हृदय–हृदय में रम गए। पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर भगवान श्रीराम चौदह वर्ष तक वनवासी रहे। वन में सीता जी को रावण ने अपहृत कर लिया, श्रीराम के पास उस समय कोई विशेष सैन्य शक्ति नहीं थी, केवल अनुज लक्ष्मण साथ थे। ऐसी असहाय अवस्था में वानरों व रीछों की शक्ति को संगठित कर रावण जैसे महाशक्तिशाली अपराजेय शत्रु को पराजित कर उन्होंने जिस असंभव कार्य को सम्भव कर दिखाया वह उनके बल–बुद्धि का परिचायक है। रामनवमी का पर्व हमें यह संदेश देता है कि धर्म की रक्षा के लिए शुभ कार्य के लिए असुरों से युद्ध करें तो वानर, रीछ, गिद्ध आदि पशु–पक्षी तक भी उसमें अपना सहयोग देते हैं। भगवान राम का आदर्श जीवन हमें सदैव धर्म व सत्य के मार्ग पर चलने तथा मातृ व पितृ भक्ति का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

हनुमान जयंती

राम के अनन्य भक्त श्री हनुमान का जन्म दिवस चैत्र सुदी पूर्णिमा को मनाया जाता है। हनुमान जी की वीरता बुद्धिमत्ता को कौन नहीं जानता?

उनकी दूरदर्शिता, बुद्धि चातुर्य से भगवान श्रीराम भी बहुत प्रसन्न हुए थे।

बुद्धि, विद्या, शील–बल सम्पन्न होते हुए भी हनुमान जी अभिमान रहित राज्य निरपेक्ष, अध्यात्म साधक हैं। हनुमान जी अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता हैं। जानकी माता ने हनुमान जी को ऐसी शक्ति प्रदान की कि वह भक्तों के सभी मनोरथों को पूर्ण कर सकते हैं। हनुमान जी ने अपनी अटूट, अविरल भक्ति से पूरे विश्व को अध्यात्म से ओतप्रोत कर दिया। यदि आज भी हम उनके जीवन से प्रेरणा लेकर प्रभु भक्ति व स्मरण के लिए प्रतिदिन कुछ समय निकाले तो अपनी आध्यात्मिक शक्ति का विकास कर सकते हैं। हनुमान जी सेवा के श्रेष्ठ उदाहरण हैं अपार शक्तिशाली होते हुए भी उनमें अहं नाम मात्र का नहीं था, सेवा भावी बनें एवं अहं का त्याग करें। यही पावन संदेश है उनकी जयंती का।

कहानी

मेरे देश की धरती

– उषा सोमानी

सूरज की सुनहरी किरणों के साथ दिन निकल आया। पक्षी भी आसमान में चहचहाते दाना चुगने जा रहे थे। अनय की आँख खुली। उसने देखा, तनय और देव भैया अभी तक सोए हैं। वह देव भैया की चादर हटाते हुए बोला– ''उठो, भोर हो गई। आपको याद है न, हम आज खेत पर नहाने चलेंगे।''

देव आँखें मलते हुए बैठ गया और तनय को उठाते हुए बोला– ''उठ आलसी! कब तक सोएगा?''

तनय ने करवट बदली और बोला– ''अभी बहुत रात है। आप भी सो जाओ।''

अनय ने घड़ी में अलार्म भरा और तनय के कान के पास बजाने लगा। घड़ी के अलार्म की आवाज से तनय हड़बड़ाकर बैठ गया और बोला– ''ओह! दिन निकल आया।''

देव बिस्तर से खड़ा हो गया। उसने तनय का हाथ पकड़ा और बोला– ''फ्यूज बल्ब! दिन सूरज उदय होने से होता है। घड़ी के अलार्म से नहीं।''

देव की बात से, तीनों खिलखिला कर हँसने लगे। अनय बोला– ''अब फटाफट तैयार हो जाओ। हमें खेत पर जाना है।''

अनय और तनय जुड़वाँ भाई थे। देव उनकी बुआ का बेटा था जो छुट्टियों में आया हुआ था।

तीनों साइकिल पर सवार होकर, थोड़ी ही देर में गाते–गुनगुनाते खेत पर पहुँच गए। देव ने साइकिल कुएँ की मुंडेर के पास खड़ी कर दी। अनय ने अपनी थैली से चुग्गा निकाला और बोला– ''देखो, उधर पगडंडी पर गोरैया का झुंड चहक रहा है। हम उन्हें चुग्गा खिलाएँगे।''

तीनों ही पगडंडी की ओर चल दिए। तीनों ने चुग्गा फैलाया। गोरैया के साथ तोता, फाख्ता, कबूतर, बया भी दाना चुगने आ गई। वे बैठकर पक्षियों को देखने लगे। सारा चुग्गा देखते ही देखते समाप्त हो गया और एक–एक कर सारे पक्षी फुर्र हो गए। देव खड़े होकर मिट्टी झाड़ते हुए बोला– ''पक्षियों को देखने का अलग ही मजा है। हम कल बहुत सारा चुग्गा लेकर आएँगे। चलो, पंप चल रहा है। हम नहा लेते हैं।''

तनय ने कुएँ के पास बने स्टोर से बाल्टी और मग निकाला। फिर उसने बाल्टी में पानी भरा। वह बोला– ''साइकिल बहुत गंदी हो रही है। पहले इसे नहला देता हूँ।''

अनय साइकिल पर चढ़कर बैठ गया और बोला– ''साइकिल के साथ मुझे भी नहला दो। पानी बच जाएगा।''

देव हँसने लगा और बोला– ''तनय! तुम भी

सीट पर बैठ जाओ। सभी को इकट्ठे ही नहला देता हूँ।''

देव ने पानी से मग भरा और साइकिल की ओर उछाला। वह हँसकर बोला, ''होली है भाई होली है।''

देव भैया की शरारत देख, अनय और तनय खिलखिला कर हँसने लगे। देव ने भी उनका साथ दिया। तीनों की हँसी से कुएँ की मुँडेर पर रौनक छा गई।

पानी से जी भर, मस्ती के बाद देव बोला– ''बहुत जोर से भूख लगी है।''

अनय मुस्कुराकर बोला– ''देव भैया! आप थोड़ी सूखी घास इकट्ठी करो। मैं अभी ईख और ताजी मूँगफली तोड़ लाता हूँ।''

थोड़ी ही देर में अनय ईख और मूँगफली ले आया। देव ने घास में आग जलाई और मूँगफली की झाड़ियों को उसमें भूनने के लिए छोड़ दिया। अब वे

बैठकर ईख चूसने का मजा लेने लगे। थोड़ी देर में मूँगफली भुनने की महक आने लगी।

देव गहरी साँस लेकर बोला– ''बहुत मस्त गंध आ रही है। मूँगफली भुन गई है।''

तनय ने एक सूखी लकड़ी उठाई और आग से भुनी मूँगफली को बाहर निकालने लगा। मूँगफली का मजा लेने के बाद अनय बोला– ''हमें, यहाँ पर थोड़ा पानी डाल देना चाहिए। कोई चिंगारी नहीं बचनी चाहिए।''

अनय ने जैसे ही पानी डाला वह जोर से चिल्लाया– ''राम–राम! देव भैया आपने यह क्या कर दिया?''

अनय की चीख से देव डर गया। वह भागकर आया और बोला– ''क्या हुआ?''

अनय ने अँगुली से संकेत करते हुए दिखाया– ''आपने ध्यान नहीं दिया, यहाँ पर बहुत सारे केंचुएँ थे। आग के ताप से देखो, बेचारे मर गए।''

देव दुखी होकर बोला– ''ओहो! मुझसे पाप हो गया। केंचुएँ तो किसान के मित्र होते हैं। प्रकृति को नुकसान पहुँचाना माता को दुःख पहुँचाने के बराबर है। इसका प्रायश्चित कैसे करूँगा?''

तनय कुछ सोचते हुए बोला– ''हमने प्रकृति को नुकसान पहुँचाया। हम प्रकृति को कुछ देकर इसका प्रायश्चित करेंगे।''

देव रुआँसा होकर बोला– ''मुझे तुम्हारी बात समझ नहीं आई। स्पष्ट बताओ।''

तनय समझाते हुए कहा– ''हम खेत की मुँडेर पर तीन पौधे लगाएँगे और उनकी देखभाल करेंगे।''

तीनों भाई खेत की मुँडेर पर स्थान का चयन कर पेड़ लगाने के लिए गड्ढा खोदने लगे।

गड्ढा खोदते हुए, देव गुनगुनाने लगा– ''मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे–मोती।'' देव के साथ अनय और तनय भी गुनगुनाने लगे।

– चित्तौड़गढ़ (राज.)

पुस्तक परिचय

स्वच्छता सुन्दरी

मूल्य २५०/-

छोटा सा दाना

मूल्य २५०/-

डॉ. शशि गोयल बाल साहित्य जगत का सुपरिचित नाम है। जी. एस. पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर एफ-७ गली नं. १ पंचशील गार्डन एक्स. नवीन शाहदरा दिल्ली ११००३२ द्वारा आपकी दो नवीन कृतियाँ एक कहानी संग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित की गई है। कहानी संग्रह स्वच्छता सुन्दरी में १६ पर्यावरण एवं अन्य विषयों पर सुन्दर बाल कहानियाँ हैं। छोटा सा दाना कविता संग्रह ४१ बाल मन भावन कविताओं का पिटारा है।

रोचक लोक कहानियाँ

मूल्य २००/-

पहेलियों वाली लोक कहानियाँ

मूल्य २००/-

डॉ. बानो सरताज बाल साहित्य संसार की वर्तमान लेखकावली में महत्वपूर्ण नाम है। अपोलो प्रकाशन २८ सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के पीछे, न्यू पिंक सिटी मार्केट, राजा पार्क, जयपुर (राज.) ने रोचक बाल लोककथाओं पर दो महत्वपूर्ण प्रकाशन किए हैं। लोक कथाओं का साहित्य जगत एक अलग ही रंग, ढंग, रस और कुतूहल से भरपूर होता है माटी से जुड़ी लोक जीवन की विभिन्न घटनाओं से पगी ये दोनों पुस्तकें निश्चय ही पठनीय है।

यादों की छूप छाँह

मूल्य
२००/-

किसी साहित्यकार की रचनाएँ पढ़ने जैसा ही रोचक होता है उसकी जीवनी या जीवन-संस्मरण पढ़ना। यदि लेखक डॉ. भेरूलाल गर्ग जैसे वरिष्ठ बाल साहित्य सर्जक हों समीक्षक और संपादक हों एवं उनका जीवन मूल भारतीय ग्राम्य परिवेश से जुड़ा हो तो उनके संस्मरणों में माटी की सौंधी सुगन्ध गमकती है। बोधि प्रकाशन सी-४६, सुदर्शन पुरा, इण्डस्ट्रीयल एरिया एक्स. नाला रोड, २२ गोदाम जयपुर-३०२००६ (राज.) द्वारा प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक में ऐसा ही अनुभव का कोष छुपा है।

छुक छुक चलती अपनी रेल

मूल्य
५०/-

वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' के इस ११ बाल कविताओं के लघु संस्करण में रसभरी बाल कविताएँ हैं। यह आपकी बाल कविताओं की प्रथम कृति है।

प्रकाशक- मानसी प्रकाशन १५६९ प्रथम तल चर्च रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली ११०००६

प्रधानमंत्री बाल प्रतिभा पुरस्कार विजेता अवि शर्मा से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की बातचीत

इन्दौर के रहने वाले अवि शर्मा ने छोटी सी आयु में 'बालमुखी रामायण' लिखी है। इनकी प्रतिभा को देखकर पी. एम. मोदी दंग रह गए। प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी ने उनसे आभासी माध्यम पर बात की।

कौन है अवि शर्मा

१२ वर्ष की अवस्था के अवि सातवीं कक्षा के छात्र हैं। अवि प्रेरक वक्ता हैं। वे १२० छात्रों को वैदिक गणित पढ़ाते हैं। इसके साथ ही अवि ने आवाज से चलने वाला कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार किया है। बालमुखी रामायण की प्रति अवि ने पी. एम. मोदी को भी भेजी है। अवि की माँ विनीता और उनके पिता अमित शर्मा हमेशा आपका साथ देते हैं। अवि ने छोटी सी अवस्था में कई उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। अवि को राष्ट्रीय सायबर ओलंपियाड और अंतरराष्ट्रीय अंग्रेजी ओलंपियाड में जोनल पदक मिल चुके हैं। प्रस्तुत हैं प्रधानमंत्री जी से उनकी बातचीत के कुछ अंश जो **'प्रधानमंत्री बाल प्रतिभा पुरस्कार'** प्रदान करते समय हुई।

प्रश्न– अवि शर्मा आपने ११ वर्ष की आयु में बालमुखी रामायण लिखी है। कैसे?

उत्तर– इसके प्रेरणास्रोत आप ही रहे हैं। लॉकडाउन के समय हम सभी बच्चे जब पूरी तरह से निराश हो गए थे, तब आपने टी. वी. पर रामायण प्रसारित करवाई। इस समय मैंने जब रामायण देखी तो मैं बहुत अधिक प्रेरित हुआ। मुझे लगा कि हम बच्चे भगवान श्रीराम के चरित्र को भूलते जा रहे हैं। इसलिए हमने बालमुखी रामायण २५० छंदों में लिखी है। भगवान राम ने एक आदर्श स्थापित किया है। हमें आज्ञाकारिता और धैर्य रखना इससे सीख सकते हैं। (इस समय अपनी किताब की कुछ पंक्तियाँ उन्होंने प्रधानमंत्री जी को सुनाई।)

प्रश्न– रामायण में वह कौन–सा पात्र है, जो आपको बहुत अधिक प्रभावित करता है?

उत्तर– ऐसे तो केवल मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ही हमारे आदर्श हैं। एक आदर्श मनुष्य कैसा होना चाहिए, यह हम भगवान श्रीराम से सीख सकते हैं। भगवान श्रीराम ने त्रेता युग में ही सारी चीजें दर्शा दी थीं। उन्होंने दिखा दिया था कि धैर्य के साथ कैसे सभी को साथ लेकर चलते हैं। साथ ही भगवान राम सभी का आदर करते थे। ऐसे में मेरे आदर्श भगवान श्रीराम ही हैं।

प्रश्न– घर में दिनभर रामायण की बातें सुनकर लोग परेशान हो जाते होंगे?

उत्तर– नहीं सर! ऐसा नहीं है, मेरे माता–पिता सबसे अधिक मुझे सहयोग करते हैं। हम जब कोई आदत बचपन से विकसित कर लेते हैं तो वह जीवन भर हमारे साथ रहती है।

प्रश्न– कोर्ट में जैसे वकील धाराओं का उपयोग कर लड़ाई लड़ते हैं, तो तुम भी घर में शास्त्रों का उपयोग कर लड़ाई लड़ते हो क्या?

प्रधानमंत्री के चुटीले प्रश्न पर अवि ने भी हँसते हुए उत्तर दिया।

उत्तर– हाँ सर! मैं शास्त्रों का उपयोग अवश्य करता हूँ किन्तु इसे बच्चों को सिखाने के लिए करता हूँ। मैं बच्चों को शिक्षा और संस्कार के साथ–साथ भारतीय संस्कृति के बारे में भी बताता हूँ। साथ ही मैं उन्हें बताता हूँ कि हमारी भारतीय संस्कृति कितनी यशस्वी और धनी है। हम कितने आगे हैं।

प्रश्न– एम. पी. के पानी में कोई विशेषता है, जो इस तरह के बच्चे पैदा होते हैं ?

उत्तर– जी हाँ! मालवा की भूमि सुंदर है। इस भूमि ने लता मंगेशकर जैसी विभूतियों को दिया है। (इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी एक घटना का उल्लेख करने लगते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने इस समय पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती का किस्सा सुनाया।)

प्रधानमंत्री जी ने कहा कि उमा भारती मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं। वह बहुत छोटी थीं, तब वह व्याख्यान करती थीं। मैं उमा भारती का व्याख्यान सुनने गया था। गुजरात के अहमदाबाद के मणिनगर क्षेत्र में उनका व्याख्यान था।

आज से ४५–५० वर्ष पुरानी बात है। समाचार–पत्रों में बहुत चर्चा होती थी। हम भी सुनने गए। मैं हैरान था कि इतनी छोटी आयु में वह धारा प्रवाह वक्तव्य देती थीं, जिस प्रकार से शास्त्रों का बहुत सटीक रूप में उल्लेख करती थीं।

उन्होंने कहा कि वह संस्कृत बोल लेती थीं। चौपाइयाँ गा लेती थीं। और मंच पर बैठे–बैठे अपने बचपने की हरकतें भी कर लेती थीं। मैं बहुत प्रभावित हुआ था। बहुत–बहुत वर्ष पहले की बात है। तब उनकी आयु बहुत कम थी। मुझे लगा कि मध्य प्रदेश में कुछ ऐसी ताकत है कि यहाँ सभी विद्वान लोग हैं जो बचपन में ही तैयार हो जाते हैं। ❊

भूल–भुलैया

– चाँद मो. घोसी

– नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राज.)

1) कौन आँख एवं जीभ से सुनता है ?

2) आठ–आँखें किसकी होती है ?

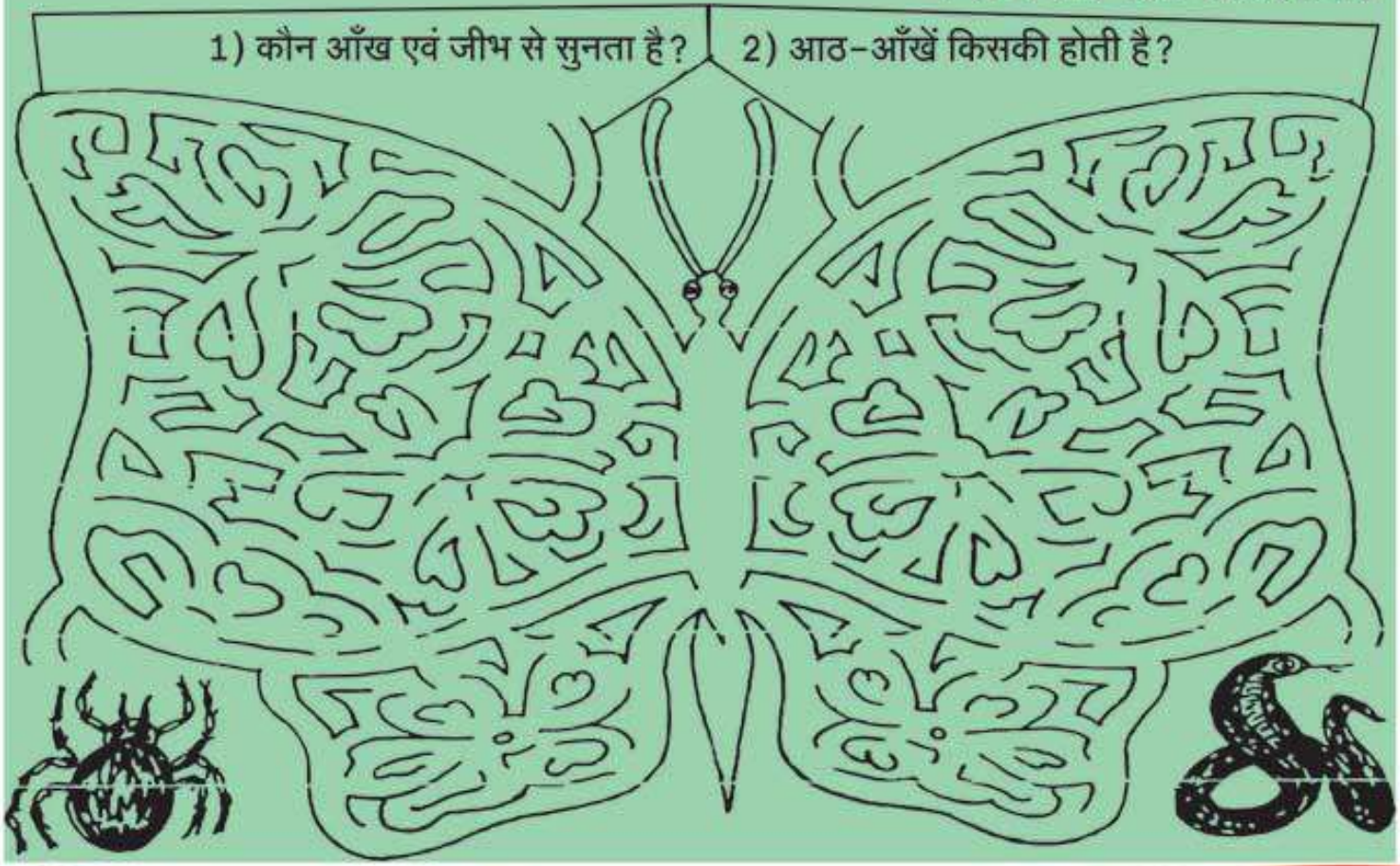

भैया की बुद्धिमानी!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

खींच न पाया दलदल

– रजनीकांत शुक्ल

उसका नाम अपराजित सिंह था। वैसे उसके नाम का अर्थ तो था कि जिसे हराया न जा सके। मगर अपने नाम के अनुरूप वह कोई लम्बा तगड़ा जवान न होकर दस साल का दुबला-पतला सीधा-सादा लड़का था।

पाँचवी कक्षा का विद्यार्थी था। उसे देखो तो ऐसा लगे कि भीड़ में से कोई एक चेहरा। धान का कटोरा कहे जाने वाले राज्य छत्तीसगढ़ में दुर्ग नाम का जिला है। जिसके भिलाई शहर में शिवाजी नगर के पास सुपेला में थाना रोड पर उसका घर था।

सुबह अपराजित विद्यालय जाता दोपहर में विद्यालय से वापस आकर, खाना खाता, पढ़ाई करता खेलता और सो जाता। यही उसकी दिनचर्या थी। उसका विद्यालय घर से कुछ ज्यादा दूरी पर था इसलिए घरवालों ने एक टेम्पो वाले को लगा रखा था। वही उसे घर से सुबह के समय विद्यालय लेकर जाता और विद्यालय की छुट्टी के समय विद्यालय से वापस घर छोड़ जाता था।

वह टेम्पो वाला जाना-पहचाना हुआ था उसका अच्छा व्यवहार था। समय से बच्चे को ले जाना और छोड़ जाना उसका नियम था। इसलिए अपराजित के घरवालों को उससे कोई शिकायत भी नहीं थी।

केवल अपराजित ही नहीं उसके विद्यालय के कुछ और बच्चे भी उसके साथ उस टेम्पो में जाते थे। उसी रास्ते में एक-दूसरा विद्यालय भी था तो कुछ बच्चे उस विद्यालय के भी उसके साथ उस टेम्पो में जाया करते थे।

टेम्पो वाला सुबह घर-घर जाकर बच्चों को टेम्पो में बैठाता और फिर पहले विद्यालय में बच्चों को उतारकर, दूसरे विद्यालय में जाता। यही वह वापसी में भी करता। विद्यालय की छुट्टी से कुछ पहले ही वह विद्यालय के दरवाजे पर पहुँच जाता। छुट्टी होते ही पहले विद्यालय के बच्चे टेम्पो में आकर बैठते, फिर उन्हें लेकर वह दूसरे विद्यालय में पहुँचता, जिसकी छुट्टी कुछ देर से होती थी। इसलिए वहीं उसे बच्चों के आने की कुछ देर प्रतीक्षा करनी होती थी। जब वे बच्चे आ जाते तभी वह वहाँ से चलता। विद्यालय की छुट्टी को छोड़कर यह उसका प्रतिदिन का काम था जिसे वह ईमानदारी से पूरा करता था।

वह इक्कीस जुलाई २००१ की बात थी। सप्ताह का अंतिम दिन यानि कि शनिवार था। सुबह से ही सभी बच्चे तैयार होकर टेम्पो की प्रतीक्षा करने लगे। अपने समय से टेम्पो वाला आया और बच्चों को उनके घरों से लेकर उनके विद्यालय की ओर चल पड़ा।

पहले विद्यालय में बच्चों को छोड़कर टेम्पो वाले से अपराजित को भी उसके साथियों के साथ उसके विद्यालय में छोड़ा और छुट्टी के समय आने का वचन दे करके चला गया।

बच्चे आज अतिरिक्त उत्साह में थे। आज सप्ताहांत था। कल रविवार की होने वाली छुट्टी के कारण वे खूब मस्ती के मूड में थे। विद्यालय की छुट्टी की घण्टी बजी तो वे अपना बस्ता उठाकर सरपट बाहर की ओर भाग लिया।

संयोग से टेम्पो वाला उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। चलो चलो चलो। बैठते ही बच्चों ने टेम्पो वाले से जल्दी चलने की रट लगा दी।

''अभी चल रहे हैं भैया! सबको आराम से बैठ तो जाने दो।'' टेम्पो वाले ने उन्हें समझाते हुए कहा। सबके बैठ जाने पर टेम्पो वाला चल दिया। अगले विद्यालय के पास पहुँचकर उसने अपना टेम्पो विद्यालय के दरवाजे के पास रोक दिया।

''अरे! अब यहाँ रुकना पड़ेगा।'' पास बैठे छात्र ने अपराजित से कहा।

''हाँ, जब तक इस विद्यालय की छुट्टी नहीं होती बच्चे नहीं आ जाते। हम कैसे चल सकते हैं?''

''सड़ो अब यहीं टेम्पो में बैठकर।'' अपराजित बोला।

''मैं तो नहीं बैठा रह सकता।'' कहता हुआ छात्र सीट से उठ खड़ा हुआ।

''अरे, कहाँ चल दिया।'' अपराजित ने पूछा।

''यहीं नीचे हूँ। अभी तो उनकी छुट्टी में देर है।'' कहते-कहते उसका साथी छात्र टेम्पो से उतर गया।

उसकी देखा-देखी अपराजित समेत कुछ और बच्चे भी टेम्पो से उतरकर नीचे आ गए। पास में ही एक नाला बह रहा था। जब तक टेम्पो वाला इस विद्यालय के बच्चों को लेने के लिए गया। इन बच्चों ने कागज की नाव बनाकर नाले के पानी में तैराना शुरू कर दिया।

साथी छात्र की नाव नाले के पानी के साथ बहती हुई काफी आगे तक पहुँच गई। ''मेरी नाव सबसे आगे निकल गई।'' कहकर खुश होते हुए साथी छात्र उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़ा। जिसके पीछे अपराजित भी आगे तक बढ़ने लगा। तभी साथी छात्र की नाव एक झाड़ी में फँस गई।

''अरे भाई! मेरी नाव तो सबसे आगे निकल गई थी लेकिन यह तो अब यहाँ झाड़ी में फँस गई। इसे निकालना होगा।'' यह सोचकर वह नाले में फँसी उस नाव को निकालने के लिए नाले में उतर गया। उसकी दृष्टि अपनी नाव पर थी। उसने अगला कदम रखा तो जिसे वह सूखी मिट्टी समझ रहा था वह ऊपर से तो सूखी ज्ञात हो रही थी जबकि वह तो काफी दलदली थी। उसने पैर रखा तो उसके अंदर धँसता चला गया।

उसने बचने के लिए जितना हाथ पाँव मारने का प्रयत्न किया उतना ही उस कीचड़ ने उसे और अपने अन्दर खींच लिया। वह लगभग समूचा ही उस दलदल के अन्दर समा जाता अगर पीछे से दौड़कर

आए अपराजित ने उसके बालों को कसकर न पकड़ लिया होता।

उस समय वहाँ पर कोई भी नहीं था। उनके साथी पीछे थे और टेम्पोवाला बच्चों को लाने गया हुआ था। अपराजित के सामने बड़ी चुनौती थी। उसने हिम्मत नहीं हारी और स्वयं को बचाते हुए पूरी ताकत लगाकर साथी को उस मुसीबत से बाहर खींचना जारी रखा।

उसकी मेहतन रंग लाई और वह लगभग आधा बाहर निकल आया था। आज उसे अपने नाम के अर्थ को सार्थक करना था। उस दलदल के साथ उसकी जोर आजमाइश थी और इस टक्कर में उसे पराजित नहीं होना था।

तभी उसके साथियों में से किसी एक की दृष्टि उनकी ओर पड़ गई। वे सारे दौड़कर वहाँ आ गए और फिर उन्होंने मिलकर उसे उस दलदल से बाहर निकाल लिया। इस प्रकार अपराजित सिंह ने अपने शौर्य से दलदल को पराजित कर न केवल इस संघर्ष में विजय पाई बल्कि अपने साथी की प्राण रक्षा भी की।

अपराजित सिंह को इस संघर्ष में विजयश्री मिली और उसके साथी छात्र की जान बच गई। अपराजित को वर्ष २००२ के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया।

उसे वर्ष २००३ के गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारतीय बाल कल्याण परिषद द्वारा दिल्ली आमंत्रित किया गया। जहाँ देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उसे राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया।

नन्हें मित्रो!

जब हम करते मन से कोशिश फिर उसका हल आता।
मंजिल का राहों, कदमों से है कुछ ऐसा नाता।।
पूरी लगन समर्पण हमसे, मंजिल भी तो चाहे।
सच्ची लगन लगी हो तो फिर आसां लगती राहें।।

– नई दिल्ली

बढ़ता क्रम 06

संकेतः– देवांशु वत्स

1. संबोधन सूचक अव्यय।
2. कारण, मकसद।
3. तैरना, तुच्छ समझना।
4. दुविधा की स्थिति।
5. यूनान की सभ्यता और जीवन दृष्टि।
6. अदला-बदली करना।

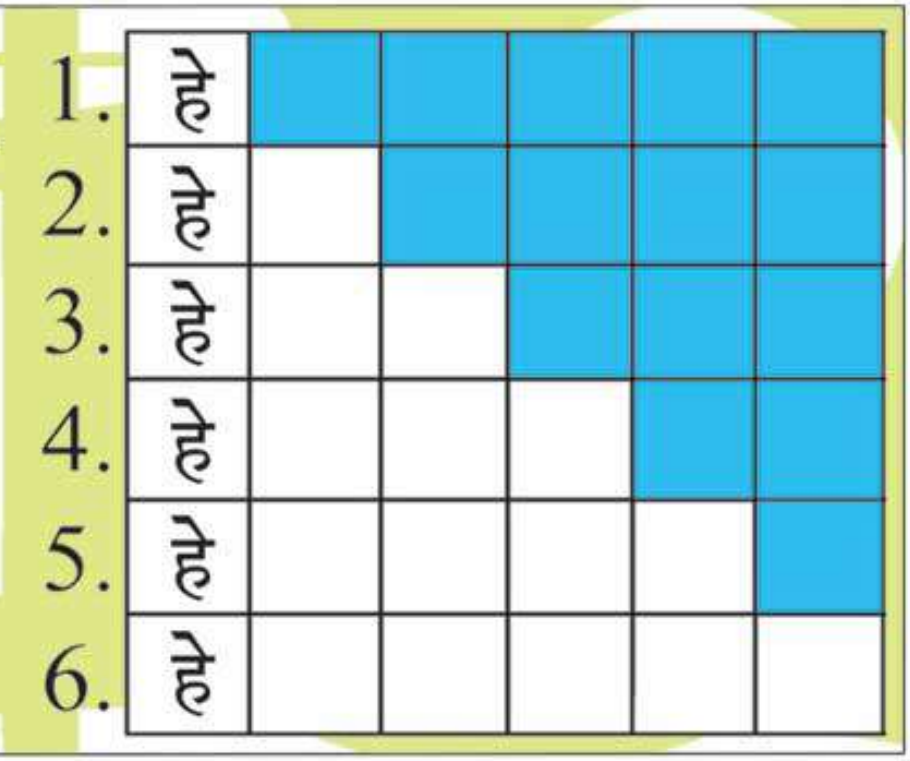

उत्तर: 1. हे, 2. हेतु, 3. हेलना, 4. हेमंत, 5. हेलनवाद, 6. हेरा-फेरी।

सच्ची भक्ति

– सुधा दुबे

भीषण महामारी में पढ़ाई ना हो पाने के कारण शाला की परीक्षाएँ किसी तरह समाप्त हुई। सभी शिक्षक उत्तर पुस्तिकाएँ जाँच कर परीक्षा परिणाम बनाने में लगे थे।

शाला की उत्तर पुस्तिका जाँचने के पश्चात मास्टर दीनानाथ शाम के समय अपने घर लौट रहे थे। तभी अपनी बस्ती के मंदिर में घंटियाँ बजाते हुए हर्ष गौरव और महेश दिखें तीनों ने मास्टर जी को प्रणाम किया– ''नमस्ते मास्टर जी!''

हाथ जोड़कर खड़े हो गए परीक्षा हो जाने के पश्चात परिणाम आने तक शिक्षक भी ईश्वर से कम नहीं लगते।

मास्टर जी– ''बच्चो! क्या हो रहा है?''

तीनों एक साथ भगवान की प्रार्थना कर रहे थे।

बोले– ''मास्टर जी! यूँ ही भगवान के दर्शन करने आए थे।''

मास्टर जी समझ गए माह के अंत में परीक्षा परिणाम आने की चिंता है। भगवान को प्रसाद चढ़ाया जा रहा है प्रार्थना की जा रही है। वे मंद–मंद मुस्कुराए और उन्होंने बच्चों को समझाने की ठानी।

अच्छा बताओ– ''हर्ष! तुम किस भगवान को मानते हो?''

हर्ष बोला– ''मैं तो ब्रह्मा जी का भक्त हूँ।''

''और गौरव! तुम?''

गौरव बोला– ''मैं तो विष्णु जी की प्रार्थना करता हूँ।''

''अरे वाह!''

''और महेश! तुम किस देवता को मानते हो?''

''अरे मास्टर जी! मैं तो अपने नाम के अनुरूप शिव जी का भक्त हूँ। वही मेरा बेड़ा पार लगाएँगे।''

''हाँ तो बच्चो! यदि मैं तुम्हें ऐसा कोई उपाय बता दूँ कि तुम तीनों को तुम्हारे भगवान मिल जाए तो कैसा रहेगा?'' मास्टर जी बोले।

तीनों एक साथ तपाक से बोले– ''हाँ हाँ! बताइए मास्टर जी हम करने को तैयार हैं।''

भक्त प्रह्लाद की तरह हमें भगवान अपनी गोद में बैठाएँगे?''

मास्टर जी– ''हाँ हाँ क्यों नहीं! तुम ब्रह्मा जी से मिलना चाहते हो, तो प्रतिदिन एक माह तक एक पौधा लगाओ और प्रतिदिन उसकी देखभाल करो, उसमें पानी दो, गोबर की खाद डालो। ध्यान रहे वे सूखने ना पाएँ। और गौरव बेटा तुम प्रतिदिन अपने

माता-पिता के सुबह-शाम चरण स्पर्श करना, उनके मना करने पर भी रुकना नहीं, तुम्हें विष्णु जी मिलेंगे।

''अरे! हाँ महेश! तुम्हें शिव जी से मिलना है न? तो तुम्हें एक महीने तक न तो झूठ बोलना है और न ही गलत काम करना है, न किसी से मारपीट करना है। यदि तुम तीनों ऐसा करते हो तो तुम्हें ईश्वर अवश्य मिलेंगे।''

तीनों बहुत प्रसन्न हुए और अपने घर आकर उन्होंने मास्टर जी के कहे अनुसार काम करना प्रारम्भ कर दिया।

हर्ष ने पौधे लगाएँ, उन्हें पानी दिया और उनकी खरपतवार साफ की पूरी बगिया हरी-भरी हो गई और पौधों में फूल भी आने लगे।

कुछ आम के पौधे हर्ष के बराबर बड़े हो गए थे। माता-पिता बहुत प्रसन्न हो रहे थे कि हर्ष बेटे ने कितनी-अच्छी वाटिका तैयार कर लिया है।

उधर गौरव सुबह शाम माता-पिता के चरण स्पर्श करता यह देख उसके घर वालों की खुशी का ठिकाना ना रहा, वे ढ़ेरों आशीर्वाद देते... आगे बढ़ो, पढ़ाई करो, बड़े आदमी बनो, स्वस्थ रहो आदि आदि...।

इधर महेश ने झूठ बोलना छोड़ दिया था, और वह लड़ाई-झगड़ा भी नहीं करता था। तीनों माह बीतने की प्रतिक्षा करने लगे, सब कामों में और माता-पिता के लाड़-प्यार में तीनों का समय मानों पंख लगाकर उड़ गया।

जैसे ही समय पूरा हुआ तीनों एकत्र हुए और दौड़ लगाकर मास्टर जी के पास पहुँच गए।

''अब बताओ मास्टर जी! हमें ईश्वर कब और कहाँ मिलेंगे?''

मास्टर जी उन तीनों की राह ही देख रहे थे। वह बोले- ''अच्छा बताओ हर्ष! ब्रह्मा जी क्या करते हैं?''

''सृष्टि का सृजन करते हैं, पृथ्वी की रचना करते हैं''

''तुमने भी तो बगीचा लगाया, पृथ्वी की सुरक्षा की, तुम्हें सृजनहार के रूप में ब्रह्मा जी मिले न? तुम तो स्वयं ही ब्रह्मा हो! कहो 'अहम् ब्रह्माअस्मि'।''

''अरे गौरव! तुम्हारे माता-पिता तो तुम्हारी प्रशंसा करते नहीं थकते, किसने पाल पोसकर बड़ा किया है? माता-पिता ने न! अब बताओ विष्णु जी क्या करते हैं? पृथ्वी का पालन-पोषण करते हैं न? पालनहार हैं।''

''हाँ मास्टर जी! एकदम सही है।''

''तुम्हें माता-पिता के रूप में कब-से मिले हैं तुम उन्हें पहचान ही नहीं पा रहे।'' मास्टर जी ने जोर देकर कहा।

''और महेश! तुमने लड़ाई-झगड़ा नहीं किया अर्थात संहारकारक के रूप में स्वयं महेश अर्थात् शिव तुम्हें मिल गए। सहायता करते हैं शिव, और वे भोलेनाथ हैं। तुम भी भोले रहे, सीधे रहे, झूठ नहीं बोला, अर्थात् तुम स्वयं ही महेश हो। तुम्हें तो महेश मिल गए अर्थात शिव मिल गए।''

''हाँ हाँ मास्टर जी! आप सच कह रहे हैं।''

मास्टर जी ने उनका परीक्षा परिणाम उनके हाथ में दिया और कहा- ''सच्ची ईश्वर भक्ति तुम्हारे हाथों में ही हैं तुम यदि माता-पिता की सेवा करोगे, पेड़-पौधे लगाओगे, और लड़ाई-झगड़ा, गाली-गलौज नहीं करोगे, तो ईश्वर तुममें ही निवास करते हैं। सच्ची ईश्वर भक्ति तुम्हारे हाथों में ही है।''

तीनों बालकों ने गुरु जी को प्रणाम किया और कहा- ''आगे से हम इसी प्रकार का कार्य करेंगे।''

मास्टर जी अपने ब्रह्मा, विष्णु, महेश को देखकर गदगद हो गए। और उन्हें गले से लगा लिया।

- भोपाल (म. प्र.)

सरल विज्ञान

प्रस्तुति- **संकेत**

सब ये नहीं जानते कि किसी काम को क्रम से या देर तक करने के बाद शरीर, दिमाग से आदेश मिलना बंद हो जाए तो भी आदतन वही काम करता रहता है. यह खेल भी है और इससे तुम दोस्तों को भी प्रभावित कर सकते हो.

आजमाने के लिए किसी भी मजबूत दरवाजे के बीच खड़े हो जाओ. अब हाथों को चित्रानुसार 30 सैकंड तक तेजी से ऊपर की ओर धकेलते रहो.

अब हाथों को आराम दो, रुक जाओ... महसूस करोगे तुम्हारे हाथ अब भी धकेलने का प्रयास करेंगे, जबकि तुम रुकने की स्थिति में आ चुके हो.

हवलदार जोगिन्दर सिंह

भारतीय इतिहास में राणा सांगा के विषय में उल्लेख है कि वे ८० घाव लगने पर भी युद्ध से विरत न हुए थे। वीरता की यह परंपरा आज भी जीवित है, जिसमें एक उदाहरण हैं हवलदार जोगिन्दर सिंह। उनका जन्म लगभग १०० वर्ष पहले ३० नवम्बर १९२२ को पंजाब के भटिंडा जिले के दातेवास ग्राम में एक गरीब किसान परिवार में सरदार श्यामसिंह जी के यहाँ हुआ था और वे १८ वर्ष के होने पर अपने जन्मदिवस पर ३० नवम्बर १९४० को सेना में भर्ती हुए। प्रशिक्षण प्राप्तकर फील्ड एरिया में दो सिख रेजीमेंट में तैनात हुए तथा ग्रीस व अफ्रीका तक अपनी सेवाएँ दीं। मैप रीडिंग (नक्शे को पढ़ने की कला) की परीक्षा में प्रथम आए। इंजीनियर प्लाटून कमांडर कोर्स जैसी कई योग्यताएँ कुशलता पूर्वक अर्जित की।

वह २४ अप्रैल १९६६ की तारीख थी। हवलदार जोगिन्दर सिंह के नेतृत्व में तीन जीपों का काफिला सेना का कुछ महत्वपूर्ण सामान लेकर नागालैण्ड की अग्रिम चौकी 'फेक' जा रहा था। उनकी बटालियन तब नागा पहाड़ी के सुजामी क्षेत्र में डटी थी। सावधानी से बढ़ता यह काफिला जैसे ही माइलस्टोन १६ पर पहुँचा एक पहाड़ी मोड़ से घात लगाए बैठे उग्रवादियों ने मशीनगनों से ताबड़तोड़ गोलीबारी आरंभ कर दी। पहली गोली जोगिन्दर सिंह के दाहिने पैर में धँसी वे जीप से उतरे और उग्रवादियों की ओर लपके तभी दाहिना कंधा भी गोली से आहत हो गया।

आक्रमण जारी था पर वे ठिठके भी नहीं। पीछे आ रहे बाकी साथियों ने भी जीपें छोड़ी और हवलदार जोगिन्दर सिंह की सहायता करने लगे। दुश्मन पर आक्रमण में सहायता उन पर काबू पाने में सहायता। शत्रु २५ मीटर दूर रहा होगा कि एक गोली उनके पेट में समा गई। खून बहे जा रहा था पर वे रुक ही नहीं रहे थे। रेंगते-रेंगते दो ग्रेनेड शत्रु पर उछाले गोलीबारी रुकी। घायल वीर साथियों का साहस बढ़ाते, बढ़ते रहे जब तक कि उग्रवादी घने जंगल में छिपने को विवश न हो गए। अब रास्ता साफ था दुश्मनों की घातक लाइट मशीनगन रूपी बाधा दूर हुई लेकिन अदम्य साहसी जोगिन्दर सिंह तो वीरगति को प्राप्त हो अनंत यात्रा पर निकल पड़े। साथियों ने उग्रवादियों की चौकी नष्ट कर सेना का मार्ग निष्कंटक कर दिया।

हवलदार जोगिन्दर सिंह को मरणोपरांत 'अशोक चक्र' का सम्मान प्रदान कर राष्ट्र ने कृतज्ञता प्रकट की।

महात्मा ज्योतिबा फुले

(जयंती ११ अप्रैल)

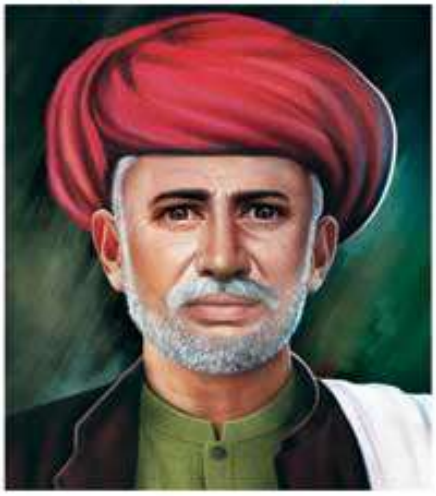

शिक्षा, सेवा, साधना, समरसता का मंत्र।
ज्योति जगाई राष्ट्र में, जब हम थे परतंत्र।।

अक्ल बड़ी या भैंस

– पवन कुमार वर्मा

प्रणय को एक अच्छे विद्यालय में प्रवेश मिल गया था। लेकिन वहाँ एक परेशानी थी। विद्यालय उसके घर से बहुत दूर था। प्रतिदिन विद्यालय आना–जाना संभव नहीं था। हारकर पिताजी को उसे विद्यालय के पास एक छात्रावास में रखने का निर्णय करना पड़ा।

प्रणय इसके लिए तैयार था। किसी भी हाल में वह इसी विद्यालय में पढ़ना चाहता था। उसके एक साथी शिवम् को भी उसी विद्यालय में प्रवेश मिला था। उसने भी छात्रावास में ही रहने का निर्णय लिया।

दोनों को छात्रावास में कमरे तो मिल गए। किन्तु अलग–अलग। दोनों एक साथ रहना चाहते थे। दोनों अभी छोटे थे और पहली बार घर से दूर गए थे। इसलिए उनके घर वाले उन्हें एक साथ रखना चाहते थे। उन्होंने इसके लिए बहुत प्रयास किया। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। अन्त में दोनों को अलग–अलग ही रहना पड़ा।

एक कमरे में दो लोगों को रहना था। प्रणय के कमरे में रहने वाला लड़का थोड़ा दुष्ट स्वभाव का था। नाम था रोहित। छात्रावास में आते ही उसने अपना रंग–रूप दिखाना प्रारम्भ कर दिया। वह बात–बात पर प्रणय पर रौब झाड़ता था।

विद्यालय के बाद वह बहुत से लड़कों को अपने कमरे में बुला लेता। फिर देर रात तक उनके साथ हो–हल्ला मचाता रहता। बेचारा प्रणय पढ़–लिख नहीं पाता था। वह चाहकर भी कुछ नहीं कर पाता! उसकी शिकायत करना किसी खतरे से कम नहीं था। प्रणय छात्रावास के जिस कमरे में रहता था, उसके

ठीक पीछे एक छोटी पहाड़ी थी। कभी–कभी एक लड़का अपनी गाय–भैंस के साथ उस पहाड़ी पर आता था। धूप से बचने के लिए वह प्रणय के कमरे की खिड़की के पास आकर बैठ जाता था।

जब कभी प्रणय अकेला होता, तब वह चरवाहा उससे खूब बातें करता था। कुछ दिनों में ही उसकी प्रणय से अच्छी मित्रता हो गई। बातों–बातों में ही प्रणय ने उसे अपनी परेशानी भी बता दी। उसकी बात सुनकर उस चरवाहे को बहुत दुःख हुआ। उसने उसको सहायता करने का भरोसा दिलाया। उसे यह बात भी पता चल चुकी थी कि रोहित बड़ा दुष्ट है। इसलिए उसे सोच–विचार कर ही कुछ करना होगा।

एक दिन प्रणय को कमरे में अकेला देखकर वह चरवाहा उसके पास आया। आज वह बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहा था।

''क्या बात है मित्र? आज बहुत प्रसन्न दिख रहे हो?'' प्रणय ने उससे पूछा।

''हाँ! बात ही कुछ ऐसी है।'' उस चरवाहे ने उछलते हुए कहा।

''मुझे भी तो बताओ।'' प्रणय भी अब जानने को उत्सुक था।

''यदि तुम थोड़ा सहयोग करो, तो तुम्हारी समस्या समाप्त हो सकती है।'' उसने मुस्कुरा कर कहा।

''मुझे क्या करना होगा?'' प्रणय ने उससे पूछा।

तब उस चरवाहे ने उसे अपनी योजना समझायी। उसकी बात सुनकर प्रणय खुशी से उछल पड़ा।

''इससे साँप भी मर जाएगा और लाठी भी नहीं टूटेगी।'' चरवाह बोला।

''लेकिन कहीं तुम्हारी योजना सफल नहीं हुई, तब तो लेने के देने पड़ जाएँगे। वह हमें छोड़ेगा नहीं। तुम नहीं जानते, वह दुष्ट स्वभाव का है।'' प्रणय थोड़ा चिंतित हो गया।

''देखो! हमें थोड़ा साहस तो करना ही होगा। तभी उससे छुटकारा मिल सकेगा। तुमने वह कहावत सुनी है न– 'अक्ल बड़ी या भैंस।' यदि हम बिना घबराए बुद्धिमानी से काम करेंगे, तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी।'' चरवाहा उससे बोला।

उसकी बात सुनकर प्रणय का मनोबल बढ़ गया। उसे किसी भी तरह रोहित से छुटकारा पाना था। उसके पास और कोई चारा भी नहीं था। वह चरवाहे को सहयोग देने के लिए तैयार हो गया।

एक रात जब सारे बच्चे सो रहे थे। तभी कोई प्रणय के कमरे में खिड़की खोलने का प्रयास करने लगा। प्रणय तो सब जानता था। वह चुपचाप सोता रहा। लेकिन रोहित की नींद खुल गई। वह घबरा गया। इतनी रात को कौन हो सकता है?

थोड़ी देर बाद किसी ने जोर से खिड़की को धक्का दिया। खिड़की अन्दर से बन्द थी, इसलिए खुल न सकी। अब तो रोहित और भी घबरा गया। डर के मारे उसने प्रणय को जगा दिया।

''देखो! न जाने कौन हमारी खिड़की खोलने का प्रयास कर रहा है?'' वह प्रणय से बोला।

''मुझे तो कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ी। तुम्हें अवश्य कोई भ्रम हुआ होगा। आराम से सो जाओ! कुछ नहीं है।'' प्रणय उसे समझाते हुए बोला।

उनकी बातें चल रही थी कि तभी खिड़की के बाहर किसी के फुसफुसाने की आवाज सुनाई पड़ी।

''तुमने सुना! लगता है कोई हमारी खिड़की के पास है। मैं कह रहा था न!'' रोहित अब और भी बुरी तरह घबराने लगा।

''लेकिन मुझे तो कोई आवाज नहीं सुनाई पड़ रही है। तुम्हें भ्रम हो रहा है रोहित। लगता है तुमने कोई भयानक स्वप्न देखा है।'' प्रणय उसे समझाते हुए बोला।

''सच में तुम्हें कोई आवाज नहीं सुनाई पड़ी?

लेकिन मुझे लगता है वहाँ कोई है।'' उसकी आवाज अब काँप रही थी।

''कुछ नहीं है! अच्छा रुको! मैं खिड़की खोलकर तुम्हें दिखाता हूँ।'' इतना कहकर प्रणय ने खिड़की को पूरी तरह खोल दिया। सामने कुछ नहीं था।

''ध्यान से देख लो। यहाँ कुछ भी नहीं है।'' प्रणय उससे बोला।

''लेकिन यह आवाज मुझे ही क्यों सुनाई दे रही है?'' रोहित की हालत खराब थी। थोड़ी देर तक दोनों जागते रहे। वहाँ अब पूरी तरह शांति थी।

यह क्रम दो–तीन दिन तक चलता रहा। रोहित को आवाज सुनाई पड़ती। लेकिन प्रणय आवाज नहीं सुनने की बात करता। प्रणय जो कुछ कर रहा था, वह उस चरवाहे की योजना के अनुसार कर रहा था। रात के समय में वहाँ आकर वह चरवाहा ही खिड़की को धक्का देता, फिर वहीं आसपास कहीं छुप जाता।

एक दिन सुबह–

''आज मैं अपने कुछ साथियों को भी अपने साथ इस कमरे में रखना चाहता हूँ।'' रोहित प्रणय से बोला।

''क्यों?'' प्रणय ने चौंक कर पूछा।

''मैं यह देखना चाहता हूँ कि यह आवाज किसी और को भी सुनाई देती है या नहीं?'' रोहित उससे बोला।

''लेकिन अगर उन्हें यह आवाज नहीं सुनाई पड़ी, तब तो सब तुम्हें डरपोक कहेंगे। सब कहेंगे कि बातें तो बहुत बड़ी–बड़ी करता है, लेकिन है एक नम्बर का डरपोक।'' प्रणय हँसते हुए बोला।

''सच कहूँ मित्र! इस आवाज ने मुझे परेशान कर रखा है। अब मैं इस कमरे में एक पल भी नहीं रहना चाहता। मेरी तो रात की नींद गायब हो गई है। तुम कुछ करो। यह बात मैं किसी और से कह भी नहीं सकता।'' वह प्रणय का हाथ पकड़ कर बोला।

''ठीक है! मैं कुछ करता हूँ।'' प्रणय बोला। उसे उस चरवाहे की योजना सफल होते दिख रही थी।

अगले कुछ दिनों तक प्रणय जानबूझ कर शांत रहा। उधर वह चरवाहा प्रतिदिन अपना काम करता रहा। रोहित बुरी तरह परेशान हो गया था। पूरी रात वह जागता रहता। जबकि प्रणय आराम से सोता।

कोई उसे डरपोक न समझें, इसलिए रोहित इस बारे में किसी से कुछ कहना भी नहीं चाहता था। वह प्रतिदिन प्रणय से मदद करने को कहता।

एक दिन प्रणय ने शिवम को अपने कमरे में बुलाया। वह तो प्रणय के साथ ही रहना चाहता था। शिवम को प्रणय ने सारी बात पहले से ही बता रखी थी। रोहित उस समय कमरे में ही था।

''यह शिवम है! मैंने इसे यहाँ रहने के लिए तैयार कर लिया है। यदि तुम यहाँ नहीं रहना चाहते, तो कोई बात नहीं। यह यहाँ रह लेगा। बदले में तुम इसके कमरे में चले जाओ।'' प्रणय थोड़ी उदासी दिखाते हुए बोला।

''ठीक है!'' रोहित झटपट तैयार हो गया। उसने तुरन्त अपना सामान समेटना प्रारम्भ कर दिया।

''वैसे तुम्हें एक बार शिवम का कमरा देख लेना चाहिए।'' प्रणय रोहित से बोला।

''मैं कहीं भी रह लूँगा। लेकिन यहाँ नहीं रह सकता!'' इतना कहकर रोहित कमरे से बाहर निकल गया।

उन दोनों ने अपने कमरे बदल लिये। जाते–जाते प्रणय ने रोहित से वादा किया कि वह उसके जाने का कारण किसी को नहीं बताएगा। दोनों मित्र फिर से एक साथ हो गए। अब तो उन्हें एक और मित्र मिल गया था। वह था वह चरवाहा। वह अब भी उनसे मिलने आता है।

– वाराणसी (उ. प्र.)

राष्ट्रीय बालगीत अंक हेतु कुछ बाल साहित्यकारों के अभिमत

अमृत महोत्सव के संदर्भ में बाल साहित्य को सार्थकता देता अभिनव प्रेरक अंक। सम्पादक मंडल की यह पहल श्लाघनीय है।

– राजेन्द्र श्रीवास्तव, विदिशा

'देवपुत्र' का मार्च अंक राष्ट्रीय कविताओं पर केन्द्रित होने से वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए अत्यधिक उपयोगी है। बेहतरीन साज सज्जा और श्रेष्ठ रचनाएँ 'देवपुत्र' की विशेषता है।

– प्रकाश तातेड़, (बच्चों का देश) जयपुर (राज.)

संग्रहणीय अंक। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

– संजीव जायसवाल 'संजय', लखनऊ (उ.प्र.)

आजादी के ७५ वर्ष का स्वागत ७५ रचनाकारों ७५ रचनाओं के द्वारा देवपुत्र के माध्यम से किया। देवपुत्र के महाविशेषांक का हृदय से स्वागत।

– सुधा गुप्ता 'अमृता' कटनी (म.प्र.)

ऐसे अद्भुत अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई। निश्चित रूप से यह अंक संग्रहणीय है।

– सुकीर्ति भटनागर (पटियाला)

आपकी पाती

पूर्व की भाँति ही बालसुलभ रुचि को आकर्षित करने वाले मुखपृष्ठ के साथ देवपुत्र फरवरी २०२२ का अंक प्राप्त हुआ। शिखरचन्द्र जैन की कहानी 'बाल जंगल में वॉशरूम' नहाने में टाल-मटोल करने वाले बच्चों को सुनाने के लिए अच्छी कहानी बन पड़ी है। मजेदार जानकारियों के साथ अच्छी आदतों के विकास में ऐसी कहानियाँ निश्चित रूप से सहायक होती हैं। 'पलक झपकते ही' शीर्षक से लिखी गई सच्ची घटना पर आधारित बालवीर रुक्कैया की कहानी बच्चों को वीरता से भर देने वाली कथा है। समकालीन बाल साहित्य में ऐसे विषयों पर प्रमुखता से लेखनकार्य जारी रहना चाहिए। 'कितने दाने कितने पक्षी', 'जीवों के प्राण बचाएँ', 'पञ्चतत्व', 'नदी किनारे गाँव उगेंगे', 'लाई लउवा लप्प' आदि मनोहारी होने के साथ-साथ बच्चों के लिए उपयोगी कविताएँ रहीं। पिछले कई अंकों से 'बाल साहित्य की धरोहर' के अंतर्गत आने वाले किसी एक बड़े बाल साहित्यकार पर आलेख और उनकी प्रतिनिधि बाल रचनाएँ हम पाठकों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस बार सर्वप्रिय बाल साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और उनकी कविताएँ विशेष रूप से 'बतूता का जूता' को पढ़ना आनंददायी रहा। कुल मिलाकर देवपुत्र का यह अंक भी अगले अंक के आने तक पाठकों को ताजगी से भरता रहेगा।

– वेद मित्र शुक्ल,
नई दिल्ली

गाँव के डॉक्टर

– डॉ. मनोहर भण्डारी

मोहनगढ़ एक छोटा–सा गाँव था। वहाँ एक भी दवाखाना या डॉक्टर नहीं था। गाँव के लोग उपचार के लिए बीस किलोमीटर दूर एक शहर किशनगढ़ में जाते थे। किशनगढ़ पहुँचने के लिए साईकिल या बैलगाड़ी से जाना पड़ता था। किशनगढ़ से सात किलोमीटर दूर बसे एक गाँव शंकरपुरा तक बस आती जाती थी। पर किशनगढ़ से शंकरपुरा जाने के लिए कोई साधन नहीं थे।

मोहनगढ़ में लगभग पाँच सौ लोग रहते थे। एक पाठशाला थी। जिसमें पाँचवी तक पढ़ने की सुविधा थी। पढ़ाने के लिए किशनगढ़ ते तीन शिक्षक आते थे। मोहनगढ़ के अधिकतर लोग खेतों में काम करने वाले मजदूर और छोटे किसान थे।

रामू और मोहन गाँव के दो होनहार बालक थे। दोनों साथी थे। दोनों ने पाँचवी तक पढ़ाई करने के बाद शंकरपुरा आठवीं तक पढ़ाई कर ली थी।

दोनों आगे पढ़ना चाहते थे। पर गरीबी के कारण वे आगे नहीं पढ़ सके। अब वे गाँव में अपने पिता के साथ खेती में हाथ बँटाते थे। उनको किताबें पढ़ना मजेदार लगता था। जब भी शहर का कोई आदमी गाँव में आता वे उससे खूब बातें करते। इस तरह वे अपनी जानकारी बढ़ाते रहते थे।

डॉ. जोशी गाँव के पंडित गंगाधर जी के भानजे थे। डॉ. जोशी दो–तीन महिने में एक–दो बार मोहनगढ़ आया करते थे। एक दिन रामू और मोहन किसी काम से पंडितजी के घर पहुँचे। वहाँ पर डॉक्टर साहब आए हुए थे। उन्होंने डॉक्टर साहब से खूब बातचीत की। डॉ. जोशी को भी यह जानकर बड़ी

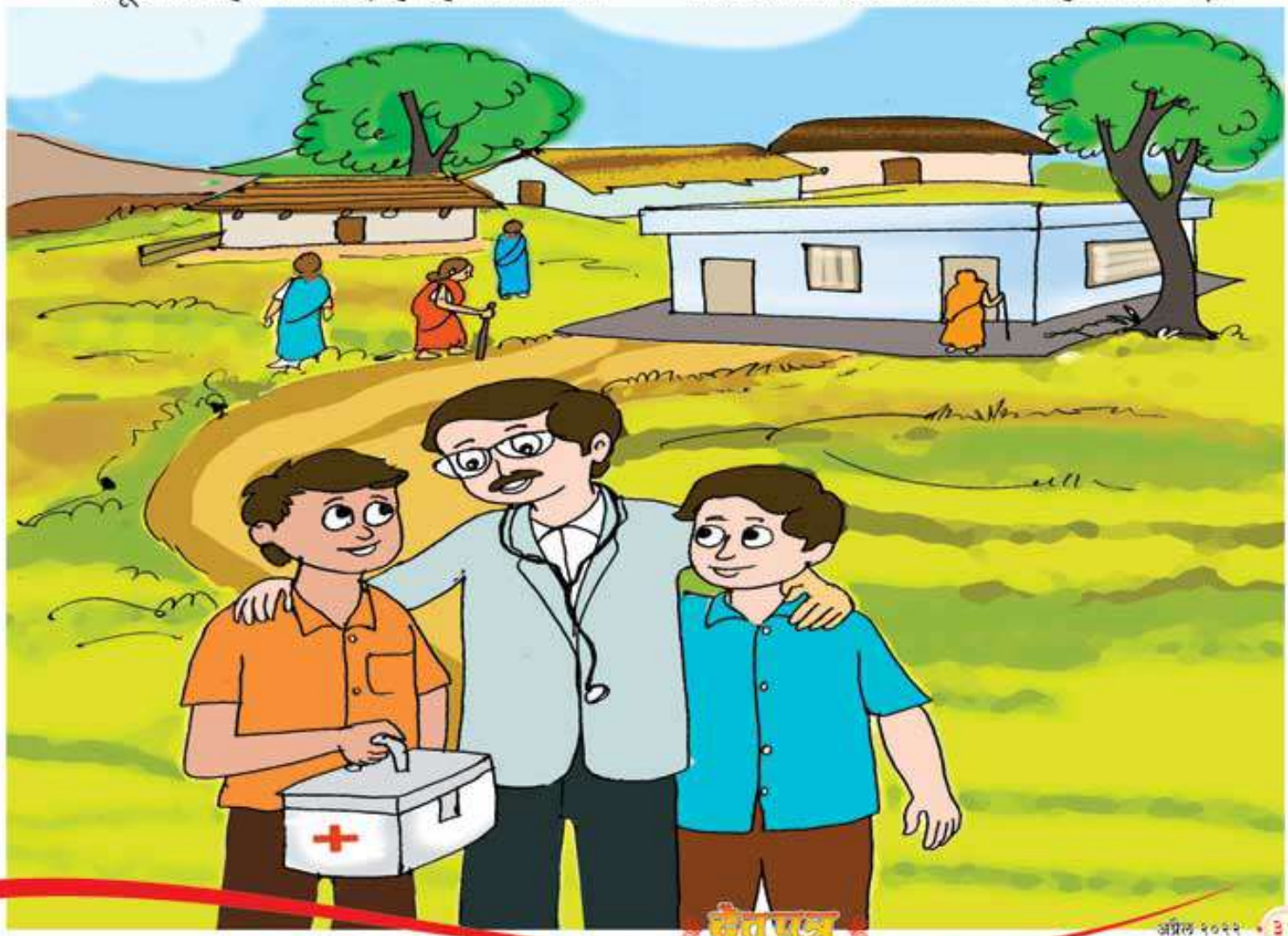

प्रसन्नता हुई कि रामू और मोहन में पढ़ने और जानने की बहुत चाह है।

एक दिन डॉ. जोशी ने उनसे कहा– ''मैं तुम दोनों को गाँव का डॉक्टर बनाना चाहता हूँ।'' दोनों उनकी बात समझ नहीं पाए। तब रामू ने पूछा– ''वह कैसे?'' तब डॉ. जोशी ने कहा कि– ''मैं तुमको डॉक्टरी उपचार की कुछ बातें सिखाना चाहता हूँ। उन बातों को सीखकर तुम गाँव का बहुत भला कर सकोगे।

डॉ. जोशी ने आगे कहा– ''जब गाँव में लोग बीमार पड़ जाते हैं। तब शहर ले जाने से पहले तक उनका क्या उपचार करना चाहिए? यह मैं तुम दोनों को सिखाना चाहता हूँ।'' दोनों खुश हो गए।

डॉ. जोशी ने दोनों के पिता से बात की और उनको किशनगढ़ ले गए। एक माह तक वे डॉक्टर साहब के साथ रहे। अस्पताल में रहकर उन्होंने डॉक्टरी उपचार सीखा। एक माह बाद डॉ. जोशी ने उनको गाँव वापस भेज दिया।

मोहनगढ़ आने से पहले डॉ. जोशी ने उनको एक छोटी–सी पेटी दी। इसमें छोटे–मोटे उपचार के लिए आवश्यक सामान था।

अब वे दोनों मोहनगढ़ के डॉक्टर हो गए थे। गाँव के लोग बहुत प्रसन्न थे। छोटा–मोटा उपचार गाँव में ही हो जाता था। वे लोगों का उपचार बिना पैसे लिए करते थे। लोग फिर भी उनको कुछ पैसे दे जाते थे। उन पैसों को वे अलग से जमा करने लगे।

वे बीमारी का उपचार तो करते थे। साथ–साथ वे बीमारियों से बचने के उपाय भी बताया करते थे। गाँव वालों को साफ–सफाई और नहाने के लाभ बताए। पानी को छानकर पीने के बारे में बताया।

इस प्रकार उन दोनों के कारण गाँव में बीमारियाँ कम होने लगी थी। कुछ ही दिनों में रामू, मोहन और उनकी छोटी–सी पेटी गाँव के लिए भगवान का वरदान बन गई। आस–पास के छोटे–मोटे गाँवों के लोग भी उनके पास उपचार के लिए आते थे। वे बिना किसी भेदभाव के और रात–बेरात उनका उपचार करते थे।

एक दिन पास के गाँव रामपुरा के हरि काका ने पूछा– ''बेटा! इस जादू के पिटारे में क्या–क्या चीजें हैं?''

रामू ने कहा कि– ''इस पेटी में उपचार के लिए कुछ आवश्यक सामान है।'' हरि काका ने पूछा– ''क्या उन चीजों का नाम हमें बता सकते हो?''

रामू ने कहा– ''क्यों नहीं? ऐसी पेटी तो हर गाँव में होनी चाहिए। मैं आपको उन चीजों के नाम बताता हूँ।'' फिर रामू पेटी का एक–एक सामान दिखाते हुए उनका नाम बताने लगा। उसकी पेटी में जो चीजें थी उनके नाम इस प्रकार हैं–

१) साफ रूई।

२) घाव पर बाँधने की कुछ पट्टियाँ।

३) चिपकाने वाली पट्टी।

४) डेटॉल साबुन।

५) घाव धोने के लिए डेटॉल और स्पिरिट की शीशी।

६) घाव पर लगाने के लिए मरहम की एक ट्यूब सोफरामाईसिन।

७) टिंचर आयोडीन की एक छोटी शीशी।

८) कैंची, चिमटी और ऑपरेशन में काम आने वाला चाकू।

९) थर्मामीटर (बुखार मापने का)।

१०) बुखार, बदन तथा पेट दर्द की गोलियाँ।

११) खाँसी, बुखार और दस्त बंद होने के घोल की शीशियाँ।

१२) सुई लगाने की एक पिचकारी और सुईयाँ।

१३) कपड़े सीने की छोटी सुई और नाइलोन का धागा।

(आगे अगले अंक में)

– इन्दौर (म. प्र.)

चिरौंजी लाल की जलेबियाँ

– सुरेश सौरभ

लाला चिरौंजी की जलेबियाँ पूरे शहर में प्रसिद्ध थीं, जो भी एक बार खाता, जलेबियों का दीवाना हो जाता।

उस दिन राहुल शाला जा रहा था। रास्ते में लाला चिरौंजीलाल की दुकान पड़ी। गर्म–गर्म जलेबियाँ देख उसके मुँह में पानी भर आया। जेब टटोली, तो उसमें एक पैसा न था। चटोरी जीभ उसे रह–रहकर परेशान करने लगी। वह सड़क के किनारे खड़ा होकर कुछ सोचने लगा। कुछ पलों बाद वह दुकान की ओर लपका और लाला से रौब में बोला– ''जरा सौ ग्राम जलेबियाँ देना लालाजी!''

लालाजी ने उसे सौ ग्राम जलेबिया थमा दीं। भीड़ काफी थी। वह एक किनारे खड़े होकर चुरमुरी जलेबियाँ बड़े चाव से खाने लगा। खाने के पश्चात दोने को एक ओर फेंक कर बोला– ''लालाजी! छियानवे रुपए दीजिए।''

''क्यों भाई पैसे कहाँ दिए?''

''दिया तो था सौ का नोट।''

''कहाँ दिया? गल्ला देख ले।''

''चाचा जी! देखो चिरौंजी लाल जी पैसे नहीं दे रहे हैं।'' राहुल वहाँ खड़े एक सज्जन का हाथ पकड़कर बड़ी लाचारी से बोला। वह राहुल की नम आँखें देखकर बोले– ''क्यों लाला! बच्चा जानकर इसे ठग रहे हो। चलो फौरन पैसे वापस करो।''

''अरे! क्या है भाई?''

''है क्या, बच्चा जानकर ठगना इनकी आदत होती है।''

''भैया! क्या पता यह लड़का ही झूठ बोल रहा हो।''

''अरे! जरा इस छटाँक भर के लड़के की आँखों में झाँककर देखो! क्या यह झूठ बोलेगा। कमाल करते हैं आप भी भाई साहब!''

''हाँ भाई! सोचा होगा बच्चा है, दिन दहाड़े चूना लगा दो। डाँट–डपट कर हजम कर जाओ पूरे सौ रुपए।''

फिर सारे मुँह राहुल की ओर हो गए। लाला ने अपना माथा पीट लिया। तू–तू–मैं–मैं से भली चंगी दुकानदारी को नुकसान हो रहा था। छियानवे रुपए राहुल को देकर भारी दिल से मुँह बिचकाकर बोला– ''हो सकता है, मैं ही भीड़–भाड़ में भूल–भटक गया हूँ।''

छुट्टी में जब राहुल घर आया, तो उसकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। उल्हास और हर्ष से अपनी बुद्धिमानी का परिचय माँ के समक्ष प्रस्तुत किया। माँ ने आश्चर्य चकित होकर कहा– ''बेटे! यह बुद्धिमानी नहीं बल्कि बेईमानी से कमाया गया धन है। इससे न केवल बुद्धि क्षीण होती है, बल्कि व्यक्ति की कलई खुलने पर जग हँसाई भी होती है। फिर वह न घर का रहता है न घाट का।''

माँ उसे डाँटते हुए चिरौंजी लाल की दुकान पर

ले गईं और विनम्रतापूर्वक कहा– ''लाला जी यह लो सौ रुपए, मैं इसकी नादानी के लिए आप से क्षमा माँगती हूँ।''

लाला जी की आँखें रुपए देखकर जगमगा उठीं। झट से रुपए को लेकर गल्ले में डाल दिया।

राहुल वहाँ उपस्थित लोगों के बीच शर्म से जमीन में गड़ा जा रहा था। आँखों में निरन्तर आँसू झर रहे थे। नन्हें मोतियों को झरते देख चिरौंजीलाल का मन पसीजने लगा। तभी राहुल बोला– ''लाला जी क्षमा कर दीजिए। अब कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा। कहो तो शाला में गुरु जी जैसे उठक–बैठक लगवाते हैं, लगा दूँ।'' सभी उसकी बाल सुलभ बात पर हँस पड़े। लाला ने उसे पुन: सौ ग्राम जलेबियाँ पकड़ा कर कहा– ''यह लो बेटा! अपनी भूल सुधारने का पुरस्कार।''

– लखीमपुर खीरी (उ. प्र.)

छ: अँगुल मुस्कान

एक नई बहू ने दही मथा उस पर मक्खन आने पर वह अपनी सास से बोली– ''माँ जी! छाछ पर मक्खन आ गया है इसे कहाँ रखूँ?''

सास–यह नाम (मक्खन) कभी न लेना! यह तेरे ससुर का नाम है। अगले दिन मक्खन आने पर बहू बोली– ''देखो माँ जी! ससुर जी आ गए, इन्हें कहाँ रखूँ?''

*****

एक महिला तालाब में डूब रही थी। भीड़ लगी थी। लेकिन कोई बचाने के लिए आगे नहीं आया। तभी एक सज्जन ने तालाब में जबरदस्त छलांग लगाई और महिला को बचा लिया। भीड़ में एक आदमी बोला– ''बड़ी हिम्मत है आप में।''

यह सुनकर वह बोला, ''हिम्मत–विम्मत कुछ नहीं। पहले बताओ मुझे इतनी जोर का धक्का किसने दिया था?

*****

आधी रात के करीब एक डॉक्टर के बंगले में फोन की घंटी बजी। गुस्से से भरे डॉक्टर ने फोन उठाकर पूछा, ''क्यों, क्या बात है?''

''जी, मुझे कुत्ते ने काट लिया है।''

''पर तुम्हें मालूम है कि मैं शाम ६ बजे के बाद किसी मरीज को नहीं देखता।''

''जी हाँ, मगर कुत्ते को यह बात मालूम नहीं है।''

*****

डॉक्टर– आपके पति दरवाजा खोलकर अंदर जाने के लिए कहते हैं, इसमें पागलपन वाली कौन सी बात है?

पत्नी– डॉक्टर साहब! आप समझे नहीं, वे चूहेदानी का दरवाजा खोलकर ऐसा कहते हैं।

*****

शाला की कक्षा में शिक्षिका ने बबलू से पूछा– बताओ, अक्ल बड़ी या भैंस?

बबलू–दीदी! पहले इनकी जन्म तिथि तो बताइये।

*****

अध्यापक छात्र से– बताओ पृथ्वी और चंद्रमा में क्या संबंध है?

छात्र– जी, बहन और भाई का।

अध्यापक– कैसे?

छात्र– क्योंकि पृथ्वी को माता कहते हैं और चन्द्रमा को चन्दा मामा।

सुरक्षित

चित्रकथा-

मालिक मुझसे अलमारी की चाबी खो गई.
ये क्या किया? बड़े लापरवाह हो तुम.
पर मुझे याद है, मैंने तुम्हें अलमारी की दो चाबियां दी थी...
दूसरी कहां है?
अरे अच्छा याद दिलाया, वो तो सुरक्षित है..
उसे मैंने इसी अलमारी के अंदर सुरक्षित रखकर ताला लगाया था.

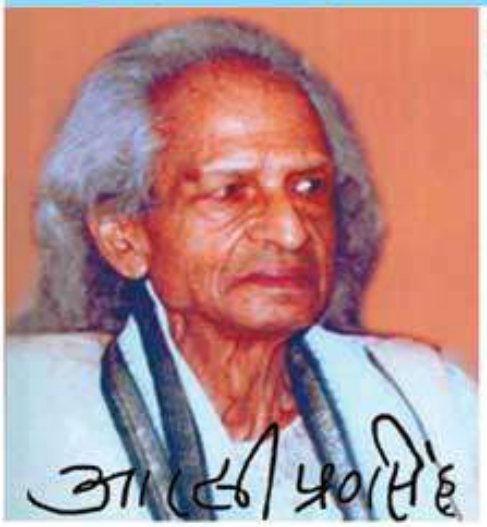

बाल साहित्य के दर्पण आरसी प्रसाद सिंह

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

प्यारे बच्चो! आपने एक लोकोक्ति अवश्य पढ़ी या सुनी होगी– 'हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े–लिखे को फारसी क्या।' अच्छा, क्या आपको आरसी का अर्थ पता हैं? आरसी का अर्थ होता है दर्पण।

छायावादी युग में हिन्दी और मैथिली भाषा के एक लेखक हुए हैं आरसी प्रसाद सिंह (१९ अगस्त १९११, १५ नवम्बर १९९६) जिन्हें बाल साहित्य का दर्पण कहा जा सकता है।

उनकी रचनाएँ पढ़कर आप अपने जीवन को सँवार और निखार सकते हैं। आरसी जी का की बाल कविताएँ सीख और मनोरंजन से रची पगी हैं।

वैसे आपको बता दें कि उनका मूल नाम आरसी प्रसाद सिंह नहीं, रामचन्द्र प्रसाद सिंह था लेकिन अंग्रेजी में उनके नाम का संक्षिप्त रूप आर. सी. प्रसाद सिंह इतना प्रसिद्ध हुआ कि बहुत से लोग उनका वास्तविक नाम ही भूल गए।

आरसी प्रसाद सिंह का जन्म समस्तीपुर जिले के एरोत गाँव में हुआ था। उनकी पहली कविता 'आम का पेड़' १६ वर्ष की अवस्था में 'बालक' नामक पत्रिका में छपी थी।

उन्होंने कविता, गीत, कहानी, एकांकी आत्मकथा और समीक्षा विधाओं में खूब लिखा। इतना लिखा कि ढेरों पुस्तकें प्रकाशित होने के बाद, अभी भी उनकी अनेक पुस्तकें अप्रकाशित हैं। उन्हें मैथिली भाषा की कृति 'सूर्यमुखी' पर १९८४ में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

जीविका के रूप में खगड़िया के कोशी कॉलेज में कुछ समय अध्यापन करने के बाद उन्होंने इलाहाबाद और लखनऊ आकाशवाणी में भी कार्य किया। किन्तु बाद में नौकरी छोड़ कर वे पूरी तरह साहित्य सेवा में जुट गए।

बाल साहित्य की उनकी चर्चित पुस्तकें हैं– 'चंदा मामा', 'जादू की वंशी', 'कागज की नाव', 'बाल गोपाल', 'जगमग', 'सोने का झरना', 'चित्रों में लोरियाँ', 'हीरा–मोती', 'जीवन और यौवन', 'रामकथा', 'ओनामासी', 'कथामाला'।

कहते हैं कि किशोरों के लिए रोचक साहित्य का अभाव है। आरसी जी ने इस दिशा में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। उनकी ये पंक्तियाँ देखिए:

हमको अभी तक वह जमाना याद है,
कुंज में छिपकर मधुर वंशी बजाना याद है।
नित्य शैया पर पिता जी का जगाना नींद से,
रूठ जाना और माता का मनाना याद है।

ऐसे ही 'अखाड़े' पर उनकी किशोर कविता बहुत प्रसिद्ध है। आप उसे खोजकर पढ़ना। आइए, यहाँ पढ़ते हैं आरसी प्रसाद सिंह की लिखी कुछ चर्चित बाल कविताएँ–

कान न होते तो!

कान न होते तो क्या करते?
करता क्या? बहरा हो जाता।
कोई मुझे पुकारा करता,
मैं गोबर गणेश–सा बैठा,
दिन भर मक्खी मारा करता।
मेरे आगे वीणा बजती,

और भैंस-सा मैं पगुराता।
केवल एक इशारे से ही,
होता दुनिया भर से नाता।
'बाबूजी! प्रणाम' जब कोई
कहता-'कहिए, मंगल तो है?'
मैं कहता- 'हाँ, देख रहा हूँ।
आसमान में बादल तो हैं।'
और पूछता कोई मुझसे
'घर पर कैसे बीबी-बच्चे?'
मैं उत्तर देता, 'मत तोड़ो,
यह अमरूद अभी हैं कच्चे।'

दूरबीन

दूरबीन से देखो भाई,
जो न पास में पड़े दिखाई,
आसमान के तारे लगते
जैसे जुगनू घास में,
चाँद खिसककर आ जाता है
जैसे पैसा पास में!
या कि रामदाने की लाई,
दूरबीन से देखो भाई!
छप्पर पर के कद्दू-जैसा
लगता सूरज दूर का,
ध्रुव तारा लगता है मानो
लड्डू मोतीचूर का!
खा मत लेना समझ मिठाई,
दूरबीन से देखो भाई!
तीस कोस पर जो मंदिर है
लगता अपने द्वार पर,
ठीक नाक के पास पहुँचते
जो फल रहते ताड़ पर!

सोने की कलगी

सूरज का दरबार लगा,
चिड़ियों का बाजार जगा!
सब पंछी चहचहा रहे,
अपनी बोली सुना रहे
सूरज बोला-रहने दो,
मुझको भी कुछ कहने दो!
सबसे पहले जो जागे,
पहुँचे वह मेरे आगे!
स्वयं जागकर चुप न रहे,
औरों को भी 'उठो' कहे!
राज मुकुट वह पहनेगा,
राजा की पदवी लेगा!
सबसे पहले ही उठकर,
सूरज के दरवाजे पर-
मुर्गे ने यों दस्तक दी
ऊँची चोटी मस्तक की!
मुर्गा बोला-कुकड़ू-कूँ,
और रहे सब टुटरू-टूँ!
मुर्गे ने पाई सिर पर,
सोने की कलगी सुंदर!

तुकबन्दी

गाँधी से आँधी मिलती है,
मिलता काला से ताला!
गंगा से दरभंगा मिलता,
मिलती लाला से माला!
डाकू से चाकू मिल जाता,
मिलती रानी से नानी!
नन्दन से चन्दन मिलता है,
मिलता दानी से पानी!
छपरा से कपड़ा मिलता है,
मिलती क्रीड़ा से पीड़ा!
जंगल में मंगल मिल जाता,
मिलता मीरा से हीरा!
मोहन से सोहन मिल जाता,
मिलता पटना से घटना!
कलकत्ता से छत्ता मिलता,
कटना से मिलता फटना!
इसी तरह चाँदी से बाँदी,
कोना से मिलता सोना!
तुकबन्दी में मन्दी मिलती,
खोना में मिलता रोना!

नानी कहती नई कहानी

एक नदी है बड़ी सयानी, बहने दो!
नानी कहती नई कहानी, कहने दो!
पंछी गाते हैं बहार में, गाने दो!
नैया पहुँची बीच धार में, जाने दो!
सेबों से हर डाल भरी है, पकने दो!
दरवाजे पर भीड़ खड़ी है, बकने दो!
चूहे-बिल्ली में खटपट है खाने दो!
पप्पी का पिल्ला नटखट है, आने दो!
अम्मा सिलतीं फ्रॉक निराली, सीने दो!
बाबा के मुँह में है प्याली, पीने दो!
एक महल है बहुत पुराना, गिरने दो!
एक नगर है बहुत सुहाना, उठने दो!
मुन्ना सपने में रोता है, रोने दो!
दुनिया में जो कुछ होता है, होने दो!

सैर-सपाटा

कलकत्ते से दम-दम आए,
बाबूजी के हम-दम आए!
हम वर्षा में झम-झम आए,
बर्फी, पेड़े, चमचम लाए!
खाते-पीते पहुँचे पटना,
पूछो मत पटना की घटना!
पथ पर गुब्बारे का फटना,
ताँगे से बेलाग उलटना!
पटना से हम पहुँचे राँची,
राँची में मन-मीरा नाची!
सबने अपनी किस्मत जाँची,
देश-देश की पोथी बाँची!
राँची से आए हम टाटा,
सौ-सौ मन का लोहा काटा!
मिला नहीं जब चावल-आटा
भूल गए हम सैर-सपाटा!

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

शेरु का भोजन

चित्रकथा: देवांशु वत्स

मुँह देखना अपशकुन

– तपेश भौमिक

एक बार महाराज कृष्णचंद्र एक अंधविश्वास के शिकार हो गए। उनके दिमाग में यह बात घर कर गई कि सुबह–सुबह पहली बार जैसे व्यक्ति का मुँह देखा जाए सारा दिन उसके अनुरूप ही घटनाएँ घटती रहती हैं।

अत: उन्होंने इस बात की घोषणा कर दी कि अगर उनका कोई भी दिन बुरा बीता तो वे उस दिन की सुबह जिसका भी मुँह पहले देख चुके होंगे उसे बुलाकर कड़ा–से–कड़ा दण्ड देंगे। यह बात जंगल की आग की तरह दरबार से बाहर नगर से गाँव तक फैल गई। अब लोग सुबह–सुबह महाराज से मिलने बतियाने से कतराने लगे।

समस्याएँ जब–जब आती थी तब–तब लोग गोपाल की शरण में आते थे। इस बार भी ऐसा ही हुआ। यद्यपि गोपाल महाराज के निकटतम लोगों में से गिने जाते थे तथापि उनके बीच भी कभी–कभी ठन जाया करती थी। कुल मिलाकर बात यह हुई कि सिपाही, प्यादे द्वारपाल, सभासद सारे के सारे सहमे हुए–से रहने लगे।

गोपाल अब तक चुप्पी साधे हुए थे। वे इस प्रतीक्षा में थे कि अहंकारी मंत्री आकर उनके आगे हथियार डाल दे। बात ऐसी ही हुई। घोषणा के दो दिन बाद ही मंत्री ने गोपाल के आगे गिड़गिड़ा कर कहा–

''गोपाल बाबू! अब आप ही ऐसे व्यक्ति हैं जो महाराज के इस सनक को गलत प्रमाणित कर सकते हो।''

इस बात को सुनकर गोपाल ने पहले तो ऐसा अभिनय किया कि बात बहुत बड़ी है जिसका निदान उसके पास भी नहीं है। उसने मंत्री से कहा– ''आप मंत्रीजी हैं, बड़े आदमी हैं, सम्हालना तो आपको है। मैं तो दरबार का साधारण विदूषक हूँ, मेरी क्या बिसात! वैसे आप मेरी शरण में आए हैं तो कोई–न–कोई रास्ता तो निकालना ही पड़ेगा।''

इतना कहकर गोपाल भी चिंता में पड़ गए। उन्हें भी महाराज के इस सनक की बात कुछ जँची नहीं। वैसे वे स्वयं भी अक्सर सुबह–सुबह महाराज से मिलने जाया करते थे। परेशानी तो उन्हें भी उठानी पड़ सकती है। वैसे समस्याओं से बाहर निकलना गोपाल के लिए तो बाएँ हाथ का खेल था।

इन दिनों महाराज से सुबह मिलने आने वाले पहले यह खबर लेते कि किसी से महाराज की पहली मुलाकात हो चुकी है या नहीं। सुबह मिलने आने वाले महल के द्वार पर आकर ठिठक जाते और एक–दूसरे

से यह कहते कि– पहले आप, पहले आप। मंत्री भीतर ही भीतर यह सोचकर खुश हो रहा था कि अब गोपाल कोई कमाल नहीं दिखा सकता। उसे तो दण्ड मिलेगा ही और साथ ही साथ राजसभा के सारे विरोधियों से भी निबटा जा सकेगा। उधर गोपाल भी मंत्री से हार मानने वाला कब था? इसलिए उसने भी मंत्री को एक बार फिर अपनी हैसियत दिखाने को कमर कस ली।

दूसरी सुबह गोपाल जानबूझकर सुबह–सुबह बहाने बनाकर महाराज के सामने आ गया। महाराज मुस्कराकर कहने लगे कि– ''देखता हूँ आज का सारा दिन कैसा बीतता है?'' इस बात को सुनकर गोपाल ने कुछ भी न कहा। वह केवल मन–ही–मन मुस्कराकर रह गया।

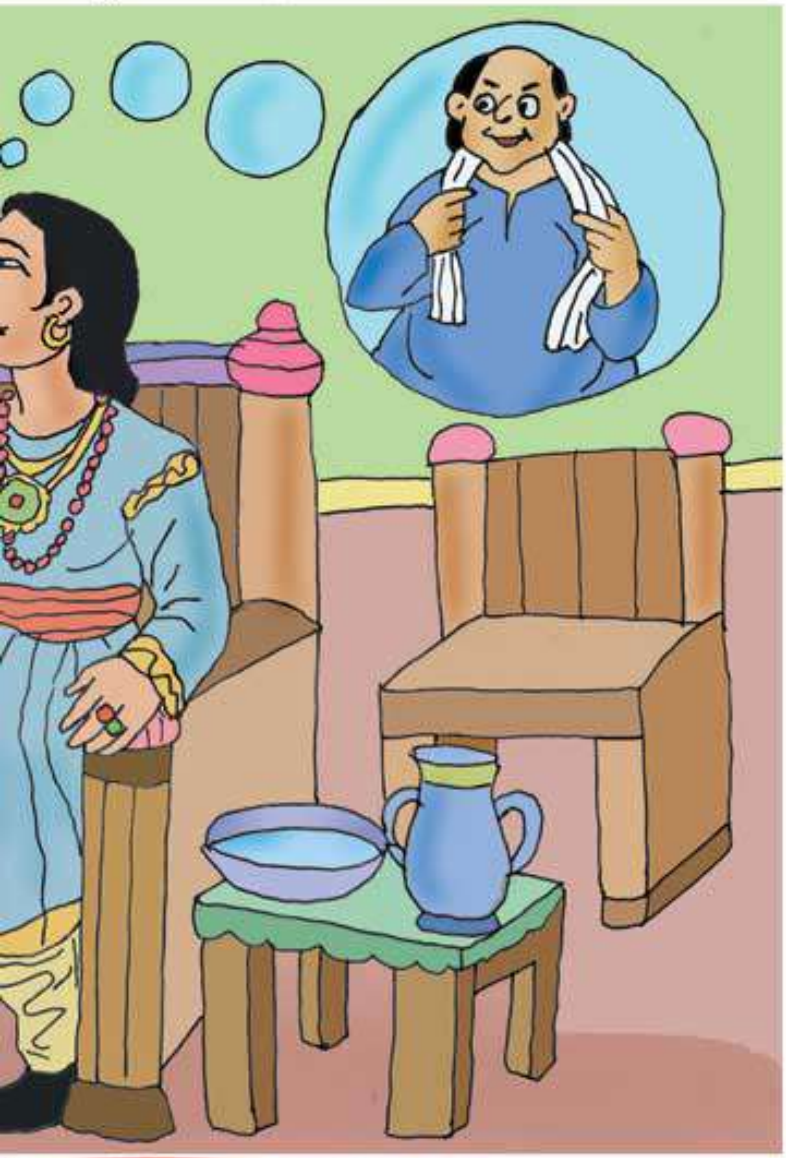

उस दिन ऐसा हुआ कि दोपहर को महाराज नाई बुलवाकर हजामत बनवाने लगे। नाई भी बड़ा बड़–बोला किस्म का व्यक्ति था। राज्यभर की ऐसी–ऐसी बातें सुनाता था कि महाराज को ही आश्चर्य होने लगता। नाई दाढ़ी बनाकर नरहन से राजा के नाखून काटने लगा।

तभी उसने कुछ ऐसी–ऐसी झूठी बातें मुँह बनाकर कहने लगा कि महाराज को हँसी आ गई और उनकी अँगुली हिल गई। इससे नरहन की धार से उनकी अँगुली की पोर कट गई और खून बह निकला।

पहले तो महाराज को नाई पर गुस्सा आ गया लेकिन बाद में उन्हें याद आया कि सुबह–सुबह उन्होंने गोपाल का मुँह देखा था, जिसके कारण उनकी अँगुली कट गई। राजवैद्य ने उनकी मरहम–पट्टी कर दी और साथ ही उनके प्रति सहानुभूति जताते हुए कहने लगे कि–

''आज न जाने महाराज ने सुबह–सुबह किसका मुँह देखा था, जिसके कारण उनकी अँगुली कट गई।'' इससे महाराज का गुस्सा और दोगुना हो गया। उन्होंने तुरंत गोपाल को बुला भेजा। गोपाल ने आने में कुछ देर कर दी। इससे महाराज का गुस्सा और बढ़ गया।

गोपाल के आने पर महाराज लगभग उबल पड़े, ''गोपाल! आज सुबह मैंने तुम्हारा मुँह देखा था, जिसके कारण मेरी अँगुली कट गई। मुझे काफी पीड़ा का अनुभव हो रहा है। क्या तुम्हें पता है कि इस कारण तुम्हें कड़ा–से–कड़ा दण्ड हो सकता है।'' इस बात को सुनकर गोपाल ने कहा, ''महाराज! क्षमा करें, मैंने भी आज आपका मुँह देखा है, आपकी तो अँगुली की पोर कट गई, मेरी तो जान के ही लाले पड़ गए।'' अब महाराज का मुँह देखने लायक था। सारे सभासद मुँह छिपाकर हँसने लगे। महाराज का भ्रम दूर हो गया है।

– गुड़ियाहाटी,

सोनपरी

– मुरलीधर वैष्णव

सोनल को उसके दादाजी बहुत प्यार करते थे। पाँच–छः वर्ष की प्यारी सी गुड़िया जो थी वह। उसके दादाजी सुबह उठते ही उसे बाहर बने एक सार्वजनिक चबूतरे पर ले जाते। वहाँ तरह–तरह की चिड़ियाँ, कबूतर, कमेड़ी, गिलहरी आदि आते थे। उनके लिए वे बाजरी और ज्वार से भरा कटोरा ले जाते। चबूतरे को साफ करके वहाँ दाना डालते। पक्षियों के लिए रखी गई पानी की कुंडियों को भी साफ करते। उनमें ताजा पानी भरते। सोनल और उसके दादाजी को आते देखकर तरह–तरह के पक्षी उनके आस–पास मंडराने लगते। सोनल उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न होती। कभी पक्षियों के पंखों का स्पर्श हो जाने से वह खिलखिलाकर हँस पड़ती।

उसी चबूतरे पर एक सोनपरी का जोड़ा भी नियमित रूप से आता था। सोनल को उस जोड़े से विशेष प्यार था। उसे कभी–कभी यह भी लगता था कि सोनपरी का वह जोड़ा बहुत खास है और उसे विशेष प्यार करता है। अनेक बार सोनपरी सोनल के सिर पर कुछ क्षणों के लिए बैठकर तुरन्त फुर्र से उड़ जाती थी। तब सोनल की खुशी का ठिकाना नहीं रहता।

धीरे–धीरे पक्षियों और गिलहरियों जैसे जीवों के प्रति सोनल के प्यार और करुणा के संस्कार गहरे होते गए। दादाजी उसे अधिकांश पक्षी लोक के रहस्यों की कहानियाँ सुनाया करते।

एक रात वह सपने में बुदबुदाने लगी– ''तुम बहुत सुंदर हो, बहुत प्यारी हो.. बस बस... नहीं नहीं... मुझे गुदगुदी हो रही है।''

उसकी बुदबुदाहट सुनकर सोनल की माँ तुरन्त जाग गई। सोनल को जगाया।

''बेटा! क्या हुआ? कोई सपना देख रही थी?'' माँ ने पूछा। सोनल कुछ क्षण चुप रही और आँखें मलती रही।

''हाँ! माँ! सोनपरी आई थी। मेरे कंधे पर बैठकर मेरे कान में लव यू... थँक्यू बोल रही थी।'' सोनल ने अपने सपने के बारे में बतलाया।

माँ की आँखें उनींदी हो रही थी फिर भी वह सोनल का सपना सुनकर मुस्कुरा उठी।

''माँ! सुनो! सोनपरी मुझे पक्षी की भाषा भी सिखा रही थी और मेरी भाषा भी समझ रही थी।'' सोनल ने कहा।

''अच्छा!'' माँ ने उसके गाल थपथपाते हुए उसे सो जाने को कहा। माँ ने सोचा कि प्यार की भाषा का सब जीवों पर असर होता है। इसलिए सोनल को ऐसा लगा होगा। वह भी तुरन्त सो गई।

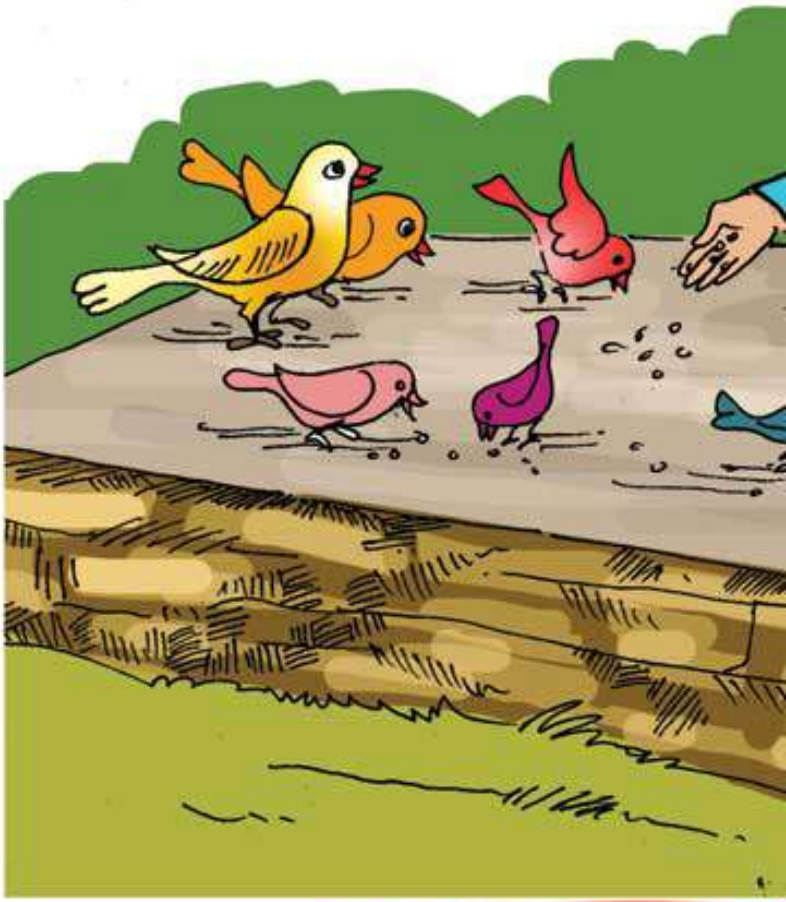

दो दिन बाद सोनल जब अपने दादाजी के साथ पक्षियों को दाना डालने चबूतरे पर पहुँची तब उसने देखा कि सोनपरी दाना चुगते हुए कुछ लंगड़ा रही है उसके एक पँजे के पास साधारण चोट-सी थी। उसे अनुभव हुआ कि सोनपरी जैसे कोमल जीव के लिए यह साधारण चोट भी भारी हो सकती है। वह यह सोच ही रही थी कि वह सोनपरी उड़कर सोनल के कंधे पर बैठ गई और उसके कान में बोली- ''कल हमारे चहचहाते झुंड पर एक लड़के ने कंकर फेंक दिया, जिसे मेरी एक बहन मर गई। मेरे पैर में भी थोड़ी चोट लगी है। लड़के ऐसा क्यों करते हैं? क्या बिगाड़ा है हमने उनका।''

यह सुनकर सोनल का मन उदास हो गया। उसकी आँखें आँसुओं से भीग गईं। साथ ही उसे उस अज्ञात शैतान लड़के पर क्रोध भी आ रहा था। उसने अपने रूमाल से धीरे से उस सोनपरी को पकड़ा। उसे घर के अंदर ले गईं। घर में पड़े ऑकस्मिक चिकित्सा बॉक्स में से उसके पैर के घाव को डिटॉल से साफ कर उस पर एंटीसेप्टिक क्रीम लगाया। फिर बाहर आकर सोनपरी को आजाद करने से पहले उसने उसे प्यार से देखा! सोनल ने पाया कि सोनपरी की आँखों में उसके लिए कृतज्ञता के भाव थे। सोनल बोली- ''तुम कितनी सुंदर हो, कितनी प्यारी हो।''

कुछ दिन बाद सोनल एक दिन अपनी साईकिल से विद्यालय जा रही थी। तब सामने से एक लड़का तेज और उतावलेपन से मोटर साईकिल चलाता हुआ आ रहा था। सोनल को लगा कि मोटर साईकिल वाला उसकी साईकिल से अवश्य टकराने वाला है। वह एकदम घबरा गई। तभी अचानक मोटर साईकिल वाले ने एकदम ब्रेक लगा दिए और सोनल के साईकिल के एकदम से निकट आकर स्वयं असंतुलित होकर गिर पड़ा। मोटर साईकिल भी गिर गई लेकिन उस लड़के के कोई चोट नहीं आई। सोनल भी सुरक्षित थी।

''तुम ठीक तो हो?'' उस लड़के से सोनल ने पूछा जो साइकिल से उतरकर एक ओर खड़ी यह सब देख रही थी। वह अभी भी घबराई हुई थी।

''वह चिड़िया कहाँ गई?'' वह लड़का अपने कपड़े झाड़ते हुए हक्का-बक्का होकर पूछने लगा। कुछ और राहगीर भी वहाँ एकत्र हो गए थे।

''चिड़िया! कौन-सी चिड़िया? कैसी बात कर रहे हो।'' एक राहगीर ने उस लड़के की मोटर साईकिल उठाने में मदद करते हुए पूछा।

''मुझे लग रहा था कि मैं मोटर साईकिल

काफी तेज गति से चला रहा था। अचानक एक सुनहरी चिड़िया मेरी आँखों के आगे से निकली।'' और अचानक मोटर साईकिल का ब्रेक लग गया।'' वह लड़का बोला।

सोनल को अचानक यह सब देख सुनकर अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसे लगा कि हो न हो वह सोनपरी ही उसे और उस लड़के को बचाने आई थी। उसने मन ही मन सोनपरी को याद कर उसे धन्यवाद दिया।

– जोधपुर (राजस्थान)

कविता

अभिनंदन है

– मनीषा बनर्जी

अभिनंदन है अभिनंदन है
नववर्ष तुम्हारा वंदन है।
अम्बर खेले है होली
धरा सजाए रंगोली।
पूरब दिशा में हो चली भोर
फैला आनंद चारों ओर
अभिनंदन है अभिनंदन है
नववर्ष तुम्हारा वंदन है।।

बच्चा टोली लगे सजीली
अधरों पर मुस्कान रसीली
सजधज खड़े द्वार पर आज
अभिनव मनो लुभावन साज
हाथों में है मंगल थाल
अक्षत, रोली और गुलाल
अभिनंदन है अभिनंदन है
नववर्ष तुम्हारा वंदन है।।

आज हैं सभी हर्ष विभोर
नहीं उमंगों का है छोर
नए रंग में, नए छंद में,
राग समेटे अंग–अंग में
लो आया अपना नववर्ष है
जगी उमंगें छाया हर्ष है
अभिनंदन है अभिनंदन है
नववर्ष तुम्हारा वंदन है।।

सबके मन में दृढ़ विश्वास
सुंदरतम भविष्य है पास
होगा भारत और महान
होगा सारे जग की शान
हो विज्ञान, कला, साहित्य
चमकेगा भारत–आदित्य
अभिनंदन है अभिनंदन है।।

– नागपुर (महाराष्ट्र)

कविता

वाह वाह रे गर्म समोसे

– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

बना रहा है रामभरोसे, वाह–वाह रे गर्म समोसे।
गाथा तेरी सबसे न्यारी,
महिमा तेरी लगती प्यारी,
स्वादों की महकाया करता–
महकाया करता फुलवारी,
चटनी ले माँ तुझे परोसे, वाह–वाह रे गर्म समोसे।
मैदा का शरीर है तेरा,
अंदर है आलू का डेरा,
कभी मटर की मस्ती तुझमें–
झरते कभी पनीर घवेरा,
सुनता हूँ तारीफ बड़ों से, वाह–वाह रे गर्म समोसे।
कौन मुकाबला तेरा करता,
बिना तुम्हारे रंग न जमता,
घर हो चाहे कोई होटल–
तू हर जगह ठुमकता रहता,
तेरे सम्मुख फीके डोसे, वाह–वाह रे गर्म समोसे।
तुने अपनापन फैलाया,
ऊँच–नीच का भेद मिटाया,
समता का संगीत सुनाया–
है आकार तिकोना पाया,
बच्चे तेरे रहें भरोसे, वाह–वाह रे गर्म समोसे।

– गुरुग्राम (हरियाणा)

बाल प्रस्तुति

चींटियों की सीख

– अलीशा सक्सेना

गर्मी का दिन था बहुत मेहनत करने के बाद चींटियों ने अपने लिए एक घर बनाया। अपनी रानी के लिए उस घर के बीच एक सुन्दर सा महल बनाया। उसके आसपास छोटी–छोटी गालियों में प्रजा के लिए घर बनाया। और ये सब उन्होंने केवल मिट्टी से और बहुत मेहनत से बनाया।

पर वे चीटियाँ ये नहीं जानती थीं कि उन्होंने वह महल एक बहुत शरारती लड़के पिंटू के घर के बगीचे में बनाया था। पिंटू बहुत ज्यादा नटखट था, वह कीड़े–मकोड़ों को पैरों तले कुचल देता। किसी भी प्राणी पर दया करना उसके स्वभाव में नहीं था।

एक दिन जब वह अपने बगीचे में खेल रहा था उसे एक पेड़ के पीछे चींटियों का महल दिखा और उस शैतान ने उसे तोड़ देने का सोचा। वह तेजी से भागता हुआ आया और इतनी मेहनत से बने उस महल पर चढ़ गया और उसे तोड़ दिया।

यह देखकर चीटियों को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने रानी से इस बात की शिकायत की रानी चींटी ने उन्हें समझाकर शांत कर दिया और फिर से महल बनाने का आदेश दिया। चींटियाँ एक जुट होकर फिर से महल बनाने लगी और देखते–देखते वह महल पहले से अधिक सुन्दर बन गया। अगले दिन चिंटू फुटबॉल खेल रहा था, उसकी गेंद गलती से एक झाड़ में गिरी जब वह गेंद लेने गया तब उसे वहाँ चींटियों का महल फिर से खड़ा मिला। अब तो उसे बहुत गुस्सा आया तो उसने फिर से उसे तोड़ने का सोचा। गुस्से में भरा हुआ चिंटू ने न आव देखा न ताव और उस महल पर कूद गया और महल को तहस नहस कर दिया। इस बार चींटियों की सेना जो पहले से तैयार थी ने पिंटू पर हमला कर दिया।

चींटियों की सेना में थोड़े मोटी हृष्ट–पुष्ट और बड़ी चींटियाँ थी। क्योंकि अपने सेना को बहुत पौष्टिक आहार दिया करती थी। उसने जोरदार हमला कर दिया जब चींटियों ने पिंटू को जगह–जगह काटना शुरू किया तो वह जोर –जोर से रोने लगा। तब उस महल की चीटियों की रानी ने कहा– ''सुनो, हमने तुम्हें पिछली बार क्षमा कर दिया था जिसके कारण तुमने हमें कमजोर समझ लिया था हम अकेले कमजोर हो सकते हैं, पर अगर एक साथ हैं तो हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। इस बार भी तुम्हें एक और अवसर दे रहे हैं अभी क्षमा माँगो और यहाँ से चले जाओ और वापस यहाँ आकर हमें परेशान मत करना।''

दर्द से बिलबिलाता हुआ पिंटू वहाँ से भाग खड़ा हुआ। तब उसको समझ में आया कि हमें किसी को अपने से छोटा नहीं समझना चाहिए और बिना कारण किसी के काम में टांग नहीं अड़ाना चाहिए। एकता में कितनी शक्ति है यह बात भी पिंटू की समझ में आ गई।

– इन्दौर (म. प्र.)

मिल गया चोर

– पवित्रा अग्रवाल

भव्या सेव लेकर अपने कमरे में चली गई थी पर जब उसकी माँ कमरे से बाहर आई तो एक केले का छिलका देखकर भव्या को आवाज लगाई।

''भव्या! तुमसे इतनी बार कहा है कि केला खाकर छिलका कचरा टोकरी में फेंका करो पर तुम सुनती ही नहीं हो। कोई फिसल कर गिर गया तो? तुम्हें पता है न दादाजी छिलके पर फिसलकर गिरे थे, तो उनकी हड्डी टूट गई थी फिर सबने कितनी परेशानी उठाई थी।''

''पर माँ! मैंने तो आज केला खाया ही नहीं।''

''तो फिर यह छिलका किसने फेंका?''

''हाँ माँ! यह बात तो सोचने की है।''

लेकिन अब तो रोज ही ऐसा होने लगा था कभी फ्रिज में से सेवफल गायब तो कभी आम और केला गायब। भव्या डरने लगी थी–

''माँ! मुझे तो डर लगने लगा है, कोई भूत–वूत तो यहाँ नहीं है?''

''कैसी बेवकूफी की बात करनी है, भूत–प्रेत कुछ नहीं होता है।''

''हाँ, होता तो नहीं है, पर कभी शाला में भी कुछ बच्चे भूत–वूत की बातें करते हैं। मैंने उनसे पूछा भी कि आप में से किसने भूत देखा है?''

''अच्छा, तब उन्होंने क्या कहा?''

''उन्होंने कहा कभी देखा तो नहीं है पर सुना अवश्य है... माँ जब हम गाँव गए थे वहाँ पर दीदी ने भी भूतों की कहानी सुनाई थी।''

''अच्छा!''

''उन्होंने बताया था कि भूतों के पैर उल्टी दिशा में होते हैं और कहीं जाने के लिए उन्हें खिड़की दरवाजों की भी आवश्यकता नहीं होती।''

''बेटा! यह सब काल्पनिक कहानियाँ होती हैं, इनका कोई सिर-पैर नहीं होता।''

''जब इनका कोई अस्तित्व ही नहीं होता तो लोग ऐसी कहानियाँ लिखते और सुनाते क्यों हैं?''

''अच्छा भव्या! एक बात बताओ क्या तुमने शेर, भालू, हाथी आदि जानवरों को कभी शाला जाते देखा है?''

''नहीं तो।''

''या कभी उन्हें मोबाईल, कम्प्यूटर आदि चलाते देखा है?''

''जब ऐसा हो ही नहीं सकता तो मैं कैसे देखूँगी माँ?''

''तो बस ऐसे ही लोग बच्चों के लिए असंभव और अति काल्पनिक कहानियाँ भी लिख डालते हैं। वैसे ही कुछ भूत-प्रेत की भी कहानियाँ लिख लेते हैं और कुछ बच्चों को वह पसंद भी आती हैं।''

तभी भव्या चिल्लाई- ''माँ! माँ! जल्दी देखो फलों का चोर मिल गया।''

माँ ने देखा एक बंदर खिड़की की टूटे सरिए से केला लेकर बाहर निकल रहा था- ''ओ तो यह था बदमाश जो रोज फल खा जाता था।''

- बैंगलूरू (कर्नाटक)

जयंती १४ अप्रैल

डॉ. अम्बेडकर जी की विचार सुधा

* हमें हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वह हर संभव प्रयत्न करना चाहिए, जो हमसे हो सके।

* गुलामी के लम्बे जीवन से कई गुना अच्छा है कुछ दिनों का स्वाभिमानी जीवन।

* जो इतिहास भूल जाते हैं, वे इतिहास नहीं बना सकते।

* यदि आप मन से स्वतंत्र हैं तो वास्तव में आप स्वतंत्र हैं।

* एक महान व्यक्ति, एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से अलग है, क्योंकि वह समाज का सेवक बनने को तैयार रहता है।

* भाग्य में विश्वास रखने की अपेक्षा अपनी शक्ति और कर्म में विश्वास रखना चाहिए।

* विचारों को पढ़कर बदलाव नहीं आता, विचारों पर चलकर ही बदलाव आता है।

* शिक्षा शेरनी के दूध की तरह है, जो जितना पिएगा वह उतना दहाड़ेगा।

* राजनीति में भाग न लेने का दंड यह है कि अयोग्य व्यक्ति आप पर शासन करने लगता है।

* उदासीनता लोगों को प्रभावित करने वाली सबसे खराब किस्म की बीमारी है।

* अच्छा दिखने के लिए नहीं बल्कि अच्छा बनने के लिए जियो।

* तुम तलवार उठाओ, हम कलम उठाते हैं, तुम धर्म बचाओ, हम राष्ट्र बचाते हैं।

* स्वाधीनता विकास का प्रथम सोपान है।

* ज्ञान हर व्यक्ति के जीवन का आधार है।

* मनुष्य हृदय साक्षात परमात्मा का मंदिर है।

* किसी का भी स्वाद बदला जा सकता है, किन्तु जहर को अमृत में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

* महान प्रयासों को छोड़कर इस दुनिया में कुछ भी बहुमूल्य नहीं है।

* हम सबसे पहले और अंत में भारतीय हैं।

परम पूजनीय सरसंघचालक जी ने किया 'राष्ट्रीय बालगीत अंक' लोकार्पित

उज्जैन। देवपुत्र के 'राष्ट्रीय बालगीत अंक' का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प. पू. सरसंघचालक डॉ. मोहनराव जी भागवत जी के कर कमलों से हुआ।

दिनाँक २२ फरवरी २०२२ को सम्पन्न इस शुभप्रसंग पर मंच पर विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दुसी. रामकृष्णराव जी, १०८ श्री महंत श्यामगिरि जी महाराज, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री पवन जी सिंघानिया, सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा के अध्यक्ष डॉ. कमल किशोर जी चितलांग्या, ग्रामभारती शिक्षा समिति मालवा प्रांत के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी पालीवाल की गरिमामय उपस्थिति प्राप्त थी।

देवपुत्र के इस विशेषांक का विमोचन प्रधान संपादक श्री. कृष्ण कुमार अष्ठाना, कार्यकारी संपादक गोपाल माहेश्वरी एवं देवपुत्र के संचालक न्यास सरस्वती बाल कल्याण न्यास के प्रबंध न्यासी श्री. राकेश जी भावसार ने करवाया।

प. पू. सरसंघचालक जी विद्या भारती मालवा प्रांत के नवनिर्मित कार्यालय एवं प्रशिक्षण अनुसंधान केन्द्र सम्राट विक्रमादित्य भवन के लोकार्पण हेतु उज्जैन पधारे थे।

अनेक राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व प्रान्तीय स्तर के ज्येष्ठ अधिकारियों व प्रबुद्ध नागरिकों की विशाल सभा में विद्याभारती के भवन लोकार्पण अवसर पर ही देवपुत्र का यह विशेषांक भी लोकार्पित हुआ।

देवपुत्र का यह विशेषांक स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव वर्ष के अवसर पर ७५ बाल गीतकारों के ७५ राष्ट्रीय बाल गीतों को संजोकर प्रस्तुत किया गया है जिसमें लगभग एक शताब्दी के राष्ट्रीय बाल गीतों की झलक प्राप्त होगी।

विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान कुरुक्षेत्र में देवपुत्र का लोकार्पण

कुरुक्षेत्र। २७ फरवरी २०२२ विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान कुरुक्षेत्र में आयोजित भव्य समारोह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मा. श्री कृष्णगोपाल जी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष डॉ. गोविन्द प्रसाद जी शर्मा, विद्या भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. दुसी रामकृष्णराव जी एवं स. शि. संस्थान के अध्यक्ष मा. ललित बिहारी जी गोस्वामी व सचिव मा. अवनीश जी भटनागर ने देवपुत्र के **राष्ट्रीय बाल गीत अंक** का द्वितीय लोकार्पण किया। अध्यक्षता केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा की निदेशक डॉ. बीना शर्मा ने की। संचालन निदेशक डॉ. रामेन्द्र सिंह ने किया।

इस अखिल भारतीय समारोह में अनेक पुस्तकें भी लोकार्पित की गईं जिनमें– बृजभाषा का प्रथम उपन्यास पूँछरी कौ लौठा, शिक्षा का स्वदेशी भाव, कड़वा मुँह मीठी बातें, देश के लिए जीना सीखें, ज्ञान की बात–१, पूर्णस्य पूर्णमादाय... बाल केन्द्रित क्रिया आधारित शिक्षा, काव्य गीत बावनी, सुर सारंग, भारतीय रसायन शास्त्र के भीष्म पितामह प्रफुल्लचन्द्र राय, दायित्वबोध छात्रों में विकास के लिए विद्यालयीन गतिविधियाँ, विभीषिका, राभा जाति की लोक कथाएँ, अनुभूत शैक्षिक प्रयोग, भारत की गौरव गाथा, भारतीय शिक्षा के मूल तत्व–मराठी, भारतीय जीवन दृष्टि एवं वैश्विक संदर्भ में भारत की भूमिका, सफर जारी है, हम सरस्वती पुत्र का तेलुगु अनुवाद, न दीप जले न फूल चढ़े, देव नदी गंगा सम्मिलित हैं।

भव्य पुस्तक लोकार्पण समारोह में **विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र** द्वारा इन पुस्तकों के सर्जक साहित्यकारों को **'संस्कृति भवन–साहित्य सेवा सम्मान'** से गौरवान्वित किया गया। सम्मानित साहित्यकार हैं– डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी (दिल्ली), डॉ. विकास दवे (म. प्र.), वासुदेव प्रजापति (राजस्थान), देवेन्द्रराव देशमुख (छ. ग.), रवि कुमार (कुरुक्षेत्र), गोपाल माहेश्वरी (म. प्र.), राजकुमार सिंह (उ. प्र.), रतनचंद सरदाना (कुरुक्षेत्र), देवेनचन्द्र दास सुदामा (असम), डॉ. अजय शर्मा (उ. प्र.), डॉ. वंदना गुप्ता (म. प्र.), कै. माधवराव कुलकर्णी (महाराष्ट्र), डॉ. बीना शर्मा (उ. प्र.), डॉ. ओ. एस. आर. मूर्ति (आंध्रप्रदेश), डॉ. मंजरी शुक्ला (हरियाणा)।

श्री अष्ठाना एवं श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री हिन्दी गौरव अलंकरण से विभूषित

इन्दौर। दिनांक २७ फरवरी २०२२ इन्दौर प्रेस क्लब के सभागार में मातृभाषा उन्नयन संस्थान ने नगर की दो विशिष्ट हिन्दी सेवी विभूतियों, देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना और श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री को प्रतिष्ठित **'हिन्दी गौरव अलंकरण'** से विभूषित किया।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने की। मुख्य अतिथि श्री तुलसीराम सिलावट (मंत्री म. प्र. शासन) व विशिष्ठ अतिथि श्री अरविन्द तिवारी (अध्यक्ष इन्दौर प्रेस क्लब) रहे। संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष अर्पण जैन 'अविचल' ने इस अवसर पर अनेक साहित्यकारों को **'काव्य गौरव अलंकरण'** भी प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन अंशुल व्यास ने किया।

श्रृद्धांजलि : स्वर कोकिला लता मंगेशकर

कोयल रानी कहाँ गई?

– अंजीव अंजुम

सूना सूना है मौसम,
आँखें भरी हुई हैं नम।
कुहू-कुहू करने वाली,
वह मीठी वाणी कहाँ गई?
पूछ रही है डाल पात से,
कोयल रानी कहाँ गई?

कहीं उसे दुत्कारा था?
कहीं किसी ने मारा था?
इस बसंत की बेला में वह,
रीत पुरानी कहाँ गई?
पूछ रही है डाल पात से,
कोयल रानी कहाँ गई?

क्यों उपवन से मुख मोड़ा?
आज घोंसला क्यों छोड़ा?
झुरमुट पीछे गीत सुनाती,
रुत ये सुहानी कहाँ गई?
पूछ रही है डाल पात से,
कोयल रानी कहाँ गई?

कोयल रानी प्यारी थी,
हम सब में वह न्यारी थी।
फूल पात पर रची हुई,
अमिट निशानी कहाँ गई?
पूछ रही है डाल पात से,
कोयल रानी कहाँ गई?

– मथुरा (उ. प्र.)

नववर्ष तुम्हारा अभिनन्दन

– दुर्गा प्रसाद शुक्ल 'आजाद'

मन्द–मन्द बह रहा पवन।
नववर्ष तुम्हारा अभिनन्दन।।
पर्वतराज हिमालय तुमको,
शत–शत शीश झुकाता है।
रत्नों का रत्नाकर प्यारा,
तुमको पास बुलाता है।।
पुलकित सबका तन–मन।
नववर्ष तुम्हारा अभिनन्दन।।
गंगा–यमुना की जल धारा,
गाती है यशगान तुम्हारा।
सब पंथों के मिलने से ही,
बना है प्यारा देश हमारा।।
महके जिसका कण–कण।
नववर्ष तुम्हारा अभिनन्दन।।
नई चेतना, नई तरंगें,
बीती बातें दूर हुईं।
सूरज के संग दिन चढ़ आया,
तम की रातें चूर हुईं।।
खिला–खिला सारा उपवन।
नववर्ष तुम्हारा अभिनन्दन।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

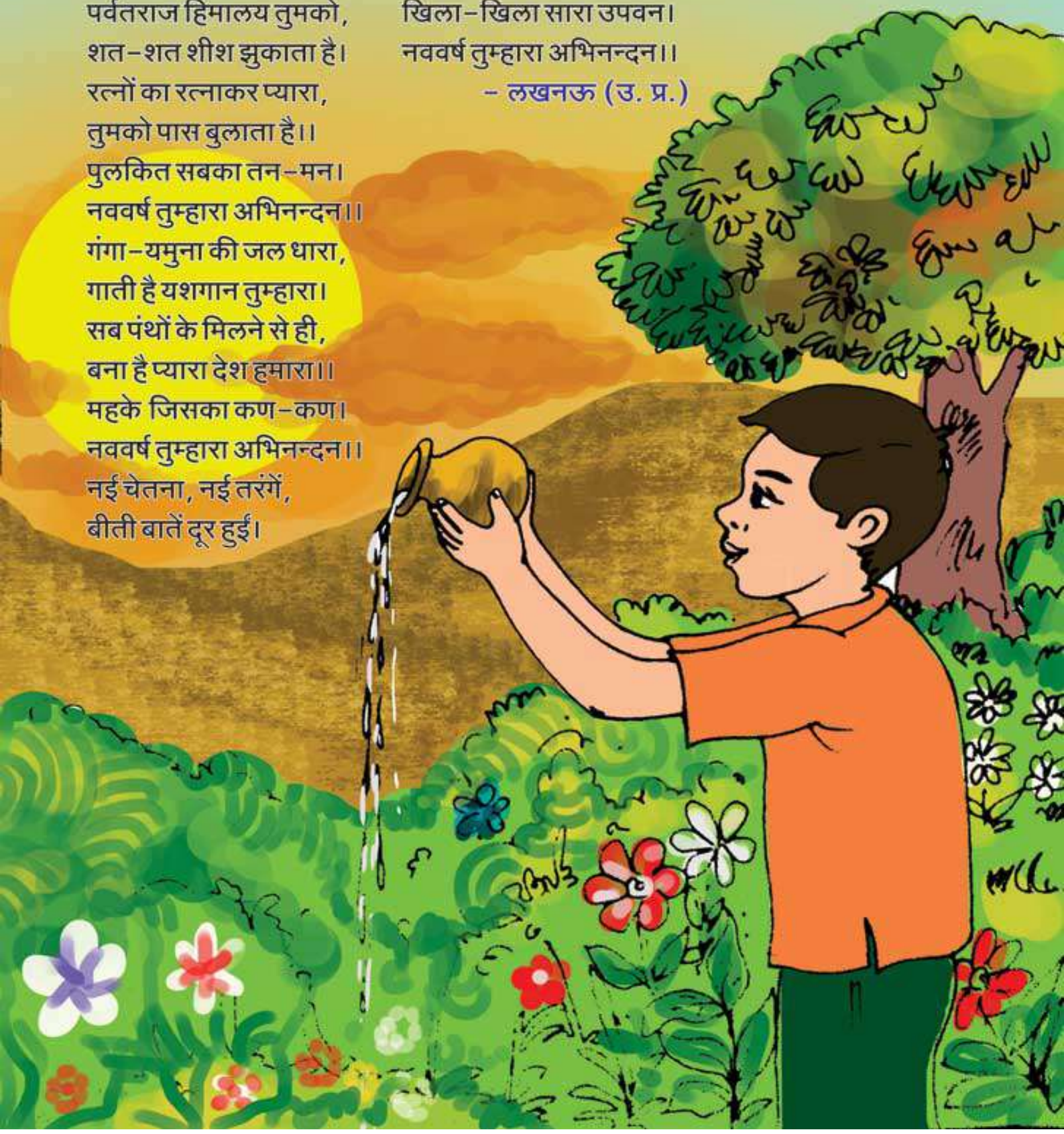

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०३/२०२२ | प्रेषण तिथि ३०/०३/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बाता

वार्षिक शुल्क
180/-

पन्द्रहवर्षीय
1400/-

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना